तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

अप्रैल-2021 . . . . रु.5/-

## ओंटिमिट्टा श्री कोदण्डरामस्वामी जी का ब्रह्मोत्सव

## २०२१ अप्रैल २१ से २९ तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव २१-०४-२०२१ से २९-०४-२०२१ तक

२१-०४-२०२१ बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - शेषवाहन

२२-०४-२०२१ गुरुवार
दिन - वेणुगानालंकार
रात - हंसवाहन

२३-०४-२०२१ शुक्रवार
दिन - वटपत्रसाई अलंकार
रात - सिंहवाहन

२४-०४-२०२१ शनिवार
दिन - नवनीतकृष्णालंकार
रात - हनुमत्सेवा

२५-०४-२०२१ रविवार
दिन - मोहिनीसेवा
रात - गरुडसेवा

२६-०४-२०२१ सोमवार
दिन - शिवधनुर्भाणालंकार
रात - एदुर्कोलु, कल्याणोत्सव, गजवाहन

२७-०४-२०२१ मंगलवार
दिन - रथ-यात्रा

२८-०४-२०२१ बुधवार
दिन - कालीयमर्दनालंकार
रात - अश्ववाहन

२९-०४-२०२१ गुरुवार
दिन - चक्रतीर्थ
रात - ध्वजावरोहण

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

*(- श्रीमद्भगवद्गीता ४-९)*

हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं- इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व से जान लेता है, वह शरीर को त्याग कर फिर जन्म को प्राप्त नहीं होता, किंतु मुझे ही प्राप्त होता है।

गीतादान प्रभावेण सप्तकल्पमिताः समाः।
विष्णुलोक मवाप्यान्ते विष्णुना सह मोदते ॥

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

गीतादान के प्रभाव से मनुष्य अंत में विष्णु लोक को प्राप्त होगा। वहाँ सात कल्पों तक विष्णु के साथ आनंद पाते हुए वास करेगा।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

# श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

## श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

## श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,000/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१000/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

# सप्तगिरि

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५१ अप्रैल-२०२१ अंक-११

विषयसूची


| | | |
|---|---|---|
| युग पुरुष श्रीराम एवं श्रीराम नवमी महोत्सव | डॉ.जी.गायत्री | 07 |
| श्रीमद्भगवद्गीता | श्री राजीव रतन | 12 |
| श्रीसंप्रदाय के प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्याजी | श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र के.अजवालिया | 14 |
| महिमान्वित श्रीराम के मंदिर-ओंटिमिट्टा | डॉ.पी.बालाजी | 17 |
| पुराणों में है हमारा विज्ञान | श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया | 19 |
| श्री वेंकटेश सुप्रभात | श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी | 21 |
| श्री प्रपन्नामृतम् | श्री रघुनाथदास रान्दड | 25 |
| श्री मूकांबिका मंदिर | डॉ.हेच.एन.गौरी | 31 |
| उगादि पर्व का वैशिष्ट्य | डॉ.एस.हरि | 36 |
| शरणागति मीमांसा | श्री कमलकिशोर हि. तापडिया | 39 |
| श्री रामानुज नूट्रन्दादि | श्री श्रीराम मालपाणी | 41 |
| तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी) | प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव<br>प्रो.गोपाल शर्मा | 42 |
| हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश | डॉ.एम.आर.राजेश्वरी | 45 |
| मंगलाशासन पासुरम | श्री के.रामनाथन | 47 |
| आइये, संस्कृत सीखेंगे...!! | डॉ.सी.आदिलक्ष्मी | 49 |
| बालनीति- मानव सेवा ही माधव सेवा | श्रीमती सी.मंजुला | 50 |
| चित्रकथा- सभी को मोक्ष | डॉ.एम.रजनी | 52 |
| क्विज | एन.प्रत्यूषा | 54 |


website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org


*गौरव संपादक*
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

*प्रधान संपादक*
आचार्य के.राजगोपालन्

*संपादक*
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम्

*मुद्रक*
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

*स्थिरचित्र*
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।



जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00



अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.


मुखचित्र - श्रीसीता सहित श्री कोदंडरामस्वामीजी (ओंटिमिट्टा)
चौथा कवर पृष्ठ - श्रीसीतालक्ष्मण सहित श्री कोदंडरामस्वामीजी (तिरुपति)

**सूचना**

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

*- प्रधान संपादक*

संपादकीय

# कालगमन

अतीत, वर्तमान, भविष्य को चलानेवाला, काल चक्र ही है। समय के प्रवाह में सभी को बहना ही है। भगवद्गीता में खुद श्री कृष्ण ने कहा कि संपूर्ण सृष्टि स्थितियों का कारण स्वरूप मैं ही हूँ। काल का न कोई रुप है, सर्व व्यापक और सर्व शक्तिमान है। स्वयं भगवान विष्णु इस रुप में प्रकाशित होकर काल का नियत्रंण करते हैं। विष्णु के हाथ का चक्र भी कालचक्र है। चंद्रमान के अनुसार वर्ष का आरंभ वसंत ऋतु से होता है। ऋतुओं में वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा गया है। तेलुगु संवत्रादी का आगमन भी वसंत ऋतु से आरंभ होता है।

वसंत ऋतु में सभी पेड फूलों से फलों से हरा भरा से शोभित होकर सब के मनों को मोहित करता है। उगादि विशेष रूप से किसी एक देवता को लक्ष्य बना कर बनाने वाला त्यौहार नहीं है। मनुष्य अपने सुविधा केलिए काल का गणना करके काल को अपने इष्ट देव, सकलदेवता स्वरूप की तरह माना गया वर्तमान और भविष्य के बारे में पहले ही जानकर एक निर्णित काल प्रणाली को रूपान्वित करना उगादि की विशिष्टता है। सृष्टि के मूल कर्ता ब्रह्मा ने चैत्र शुद्ध प्रदिपदा, सूर्योदय के समय में इस संपूर्ण सृष्टि को समग्र रूप से बनाया। इसलिए उनकी याद में यह उगादि पर्व को मनाते हैं।

जीवन सागर में आनेवाला सुख दुःखों को पहले ही जान कर जीवन को सुख और सुलभ बनाने केलिए पंचागश्रवण उगादि के दिन मंदिरों में किया जाता है।

''उ'' माने खुशी 'ग' माने गम्न इसलिए 'उग' माने भगवत कृपा के कारण खुशी से एक साल तक नियमबद्ध, धर्मयुक्त मार्ग का अनुसरण करने केलिए उसे प्रथम दिन के रुप में ग्रहण करना चाहिए। 'युगादि' पद सृष्टि का आरंभ को सूचित करता है तो 'उगादि' पद सृष्टि के मूल को जान कर आनंद को आस्वाद करने का होता है। इस तरह दोनों पद 'कार्यकारणफल' त्रिवेणी संगम की तरह हमारे जीवन गमन और उन्नति के लिए मूल है।

# युग पुरुष श्रीराम एवं श्रीराम नवमी महोत्सव

डॉ.जी.गायत्री
मोबाइल - ९४९०८३७२८०

**भा**रतीय संस्कृति में त्योहारों का बडा महत्व है। वैसे तो भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। क्यों कि अन्य देशवासियों की तुलना में भारतवासी अधिक त्योहार मनाते हैं। स्वभावतः भारतीय उत्सव प्रेमी है। भारतीयों के लिए हर मास और हर तिथि की अपनी महिमा है। ऐसी कोई तीथी नहीं है, जिस दिन कोई न कोई पर्व न पड़ता हो। इन पर्वों का अपना ऐतिहासिक या पौराणिक महत्व होता है। ऐसे ही पर्वों में श्री रामनवमी भी एक पवित्र पर्व है जो श्री राम के जन्म दिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

### त्योहार मनाने का उद्धेश्य :

मानव निरंतर परिश्रमी है। कई जिम्मेदारियाँ और नित्य की एकरसता मानव जीवन में नीरसता उत्पन्न करती है। हर रोज एक जैसी जीवन-चर्या, एक जैसा भोजन, वही कपडे, वही दौड-धूप। इसीलिए हर परिवार में लोग त्योहार की बेचैनी के साथ प्रतीक्षा रहते है। पारिवारिक सक्रियता बढाना त्योहार का प्रमुख उद्धेश्य होता है। त्योहारों से परिवार में आनंद और उल्लास छा जाता है! हमारी नीरसता और ऊब समाप्त हो जाती है। हमारा जीवन नयी शक्ति, नयी उमंग और उत्साह से भर जाता है। इस से स्पष्ट होता है कि जीवन यात्रा में त्योहार की स्थिति तपती दोपहरी में एक छायादार वृक्ष जैसी है। पर्व हमें याद दिलाते हैं कि हम जीवन में अकेले नहीं हैं। पर्व हमारी सामाजिक सोच और सामुदायिक जीवन को विकसित करते हैं। त्योहार पारस्परिक प्रेम सम्बन्धों को मजबूत करते हैं।

हर वर्ष त्योहार हमें अपने पूर्वजों और उन के महान आदर्शों का स्मरण कराते हैं। त्योहार हमें जीवन जटिलताओं और समस्याओं से संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

### युगपुरुष श्रीराम :

भारत महापुरुषों की जन्मभूमि है। भारत में कई युग पुरुषों का जन्म हुआ है। हमारे देश में

महापुराषों की जयंतियाँ मानने की परंपरा है। ऐसे ही महापुरुषों में भगवान श्री रामचंद्र भी एक है, जिनका जन्मदिन पूरे भारत-वासियों के लिए पावन पर्व बना हुआ है। त्रेतायुग में वसंत ऋतु, चैत्र नवमी, गुरुवार के दिन ही पुनर्वसु नक्षत्र युक्त कर्काटक लग्न, अभीजित मुहूर्त में मध्याहन १२ बजे भगवान श्री राम का जन्म हुआ। श्रीराम धर्म रक्षणार्थ अवतरित श्री महाविष्णु के सातवाँ अवतार है। खासकर श्री महाविष्णु के सातवाँ अवतार रावण संहार केलिए अवतरित हुए। ज्योतिष शास्त्र शोधाध्ययन के आधार पर श्री राम का जन्म शालिवाहन शक ५११४, जनवरी १० को हुआ होगा ऐसा एक विचार व्यक्त हुआ है। भगवान श्रीराम साक्षात् परब्रह्मा है। धर्म की रक्षा केलिए, लोक कल्याण हेतु मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी अवतरित हुए। श्रीमद्भगवद्गीता में एक जगह भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा किः

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य दतात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

इस श्लोक का अर्थ है- ''जब जब धर्म की हानि होने लगती है और अधर्म आगे बढने लगता है, तब तब मैं स्वयं की सृष्टि करता हूँ अर्थात् जन्म लेता हूँ। सज्ञनों की रक्षा एवं दुष्टों के विनाश और धर्म की पुनः स्थापना केलिए मैं विभिन्न युगों (कालों) में अवतरित होता हूँ।'' धर्म की स्थापना एवं रक्षा केलिए ही श्रीरामजी का आविर्भाव हुआ है। आदिकाल से भारत भक्तजनों, त्रृषियों; मुनियों की पुण्यभूमि है। परम पावन भारत में भगवान श्री राम को आदर्श पुरुष एवं मर्यादा पुरुषोत्तम के रुप में देखा जाता है। वर्तमान समाज में हर युवक को भगवान श्री राम जी का पथप्रदर्शन करना हैं। श्री राम के पावन चरित्र आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श प्रभु आदि विभिन्न रुप युवकों केलिए तथा भावि पीढी केलिए आदर्श एवं अनुसरणीय तत्व से भरा हुआ है। जैसे श्रीरामजी आदर्श पुत्र के रुप में अपने पिता के वचन का पालन किया है वैसे ही आज के युवक भी बडे-बुजुर्गों तथा अपने माता-पिता के कहना मानने की आवश्यकता है। भगवान श्री राम जी के पावन चरित से पति-पत्नी के दांपत्य जीवन, प्रेम, अनुराग, समझौता आदि तत्वों को उदाहरण के तौर पर आदर्श के रुप में स्वीकार ना हैं।

कष्ट एवं संकटमय परिस्थितियों में भी राम और सीता एक साथ रहकर ही सब को आदर्श तथा मार्गदर्शक बने हुए हैं। आज समाज में ऐसी संतुलित वातावरण देखने को नहीं मिलती है। दंपति परिवार की गाडी के दो पहिये हैं। दोनों के संतुलन से तथा समान होने से ही परिवार की गाडी आगे बढ सकती है। दोनों के असंतुलन होने पर गाडी रुक जाती है।

दुर्घटनाग्रस्त भी हो सकती है। पारिवारिक गाडी के दो पहिए पति और पत्नी होते हैं। प्रेम, अनुराग, आत्मीयता, त्याग, ईमानदारी और विश्वास आदि से पति-पत्नी के जीवन काफी सुखमय होता है। बल्कि इन के लोप से पति-पत्नी में तनाव शुरु होता है। भिन्न परिवार और भिन्न परिवेश से आये पति-पत्नी बहुत कम उत्तेजना से एक दूसरे से लडने तैयार हो जाते हैं। पति-पत्नी दोनों के समझौते के कारण ही कई दांपत्य जीवन के झगडे दूर हो जाते हैं। किंतु आज परिस्थितियाँ बदल रही है। पैसे का महत्व बढ रहा है। साथ ही स्त्री पुरुषों के सोच विचार से दोनों के बीच में दूरी बढने की संभावनाएँ बढ रही है। ऐसी परिस्थितियाँ तलाक या विवाह विच्छेद का जन्म देती है। भारत केलिए यह नयी परंपरा है। आज विवाहित लोगों में छोटे-मोटे कारणों से तलाक हो रहे हैं। दांपत्य जीवन के तनाव के कारण तलाक को पति-पत्नी दोनों चाहने लगे हैं।

इस प्रकार की संघर्षमय विवाह विच्छेद व्यवस्था में बदलाव एवं सुखमय समझौतापूर्ण दांपत्य जीवन केलिए एक मात्र कष्ट निवारण मंत्र है - श्री राम और सीता का पावन चरित श्रीमद्रामायण है। इस प्रकार की संघर्षमय विवाह विच्छेद व्यवस्था में बदलाव एवं सुखमय समझौतापूण दांपत्य जीवन केलिए एक मात्र कष्ट निवारण मंत्र है- श्रीराम और सीता का पावन चरित श्रीमद्रामायण का पठन। आज के युवा श्री रामायण को पठन करना या श्रवण करना सामाजिक हित केलिए आवश्यक और अनिवार्य भी है। क्यों कि रामायण की पौराणिक कथाएँ हमें पति-पत्नी अनुराग एवं दांपत्य संबंध को सुदृढ बनाए रखने केलिए एक आदर्श साधन माना जाता है। आदिकाल से ही भगवान राम को आदर्श साधन माना जाता है। आदिकाल से ही भगवान राम को आदर्श पुरुष एवं मर्यादा पुरुषोत्तम के रुप में ही अधिक लोग मानते हैं। मंगलमूर्ति श्री राम सभी युवकों केलिए, भावि पीढी केलिए आदर्श बने हुए हैं। सामाजिक भलाई केलिए आज के युवा लोग श्रीराम को आदर्श मानकर उनके पथ में चलना जरूरी है। भारत में खास कर कुछ प्रोतों में विवाह के निमंत्रण पत्रिका में श्री राम के श्लोक एवं श्री राम सीता के चित्र मुद्रित करने की प्रथा है। आज भी इसी प्रथा का पालन किया जाता है। इस से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय विवाह व्यवस्था का प्रतिरूप श्रीराम को माना जाता है। श्रीराम का जीवन केवल त्रेतायुग में नहीं बल्कि कलियुग तक आदर्शमय रहा है। जो लोग उनका अनुसरण करते हैं। उन का जीवन सुखमय बन पाता है। ऐसे कल्याणमूर्ति श्रीराम के चरण कमल पर विश्वास करना तथा भक्ति समर्पण करना समुचित है।

जीवन पथ से विचलित लोगों केलिए श्रीराम जी मार्गदर्शक है। उनका सारा जीवन मानव जीवन के उद्धार

केलिए ही है। ऐसे कल्याणमूर्ति को पाकर भारतावनि धन्य हुआ हैं। श्रीराम के हर एक वचन एक अमूल्य मंत्र है। सभी लोगों को भव संकटों से मुक्त करनेवाला पीयूष है।

**श्रीरामनवमी का उत्सव :**

श्रीराम जैसे महान पुरुष के जन्मदिन को लोग निष्ठा एवं लगन से सारे देश में मनाते हैं। लोगों का विश्वास है कि चौदह वर्ष का वनवास, रावण संहार, सीता समेत श्री राम जी का अयोध्या में पट्टाभिषेक आदि घटनाएँ चैत्र शुद्ध नवमी के दिन ही हुई है। श्री सीता राम कल्याण भी चैत्र नवमी के दिन ही संपन्न हुआ है। श्री रामानवमी के दिन आंध्रप्रदेश में ओंटिमिट्टा में और तेलंगाना में स्थित भद्राचलम में श्री सीता राम कल्याणोत्सव बडे वैभव के साथ किया जाता है।

**श्रीराम नवमी की विशेषताएँ :**

पूरे देश के राम मंदिरों में उस दिन श्री सीताराम कल्याण उत्सव को वैभव के साथ किया जाता है। भक्तजन अधिक

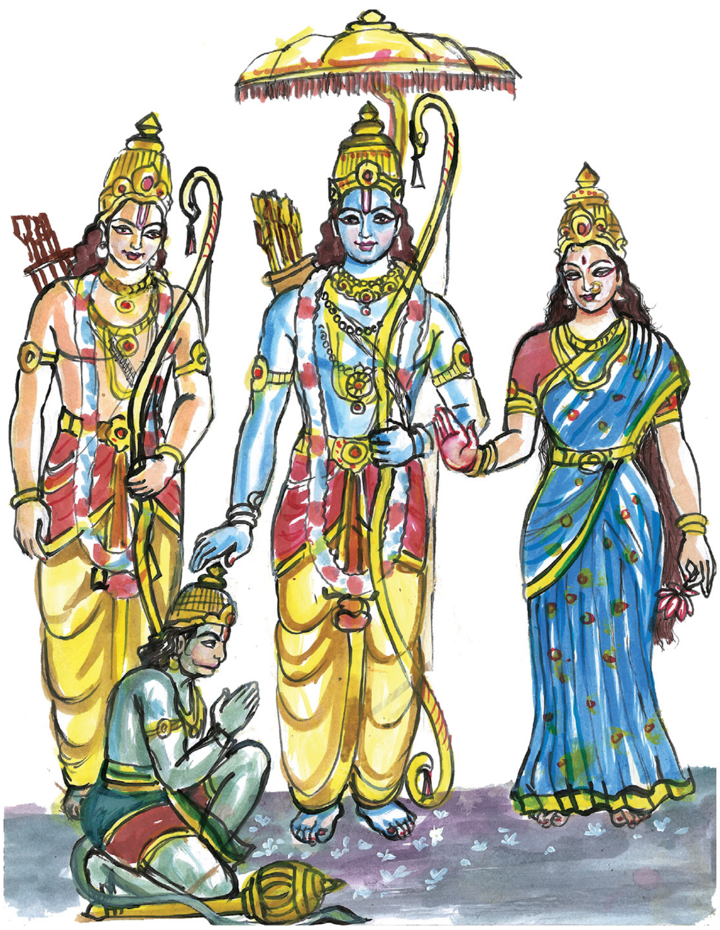

संख्या में भाग लेते हैं। हर राम मंदिर में श्रीरामनवमी के दौरान नौ दिन तक श्रीमद्रामायण का पठन किया जाता है। श्रीराम के साथ सीता, लक्ष्मण और हनुमान का भी पूजा पाठ किया जाता है। श्री राम नवमी के दिन श्री सीता, राम, लक्ष्मण और हनुमान की सवारी निकलती है। इस से भक्तजनों का नयनानंद होता है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना में सरकार की ओर से माननीय मुख्य मंत्रि लोग श्री सीताराम कल्याणोत्सव केलिए भगवान राम और सीता मई केलिए रेशम कपडे, मोती, आभूषण आदि समर्पित करते हैं।

**श्रीराम नवमी का विशिष्ट नैवेध्य :**

श्रीराम नवमी केलिए मुख्यतः पानकम (गुड शरबत), वडपप्पु (भिगोया हुआ मूंगदाल) आदि विशेष प्रकार के व्यंजन नैवेध्य के रूप में भगवान श्री राम को समर्पित करते हैं और महाप्रसाद के रूप में भक्तजनों में बाँटा जाता है।

**पानकम (गुड शरबत) :**

गुड, इलाची, काला मिर्चि, शोंट आदि से शरबत बनाया जाता है। इस से शरीर का तापमान सम बना रखता है।

**वडपप्पु (कच्चा मूंगदाल) :**

मूंगदाल को पानी में भिगाकर कच्चा मूंगदाल उस में कच्चा आम, नमक, हरा मिर्च भी मिलाकर वडपप्पु बनाया जाता है। कच्चा मूंगदाल को तेलुगु में वडपप्पु कहते हैं। इन प्रसादों के पीछे भारतीय आयुर्वेदिक परमार्थ भी निहित है। भगवान को निवेदन करनेवाले सभी प्रसाद सर्वकालों में समयानुसार स्वास्थ्य वर्धक होते हैं। देवी भागवत सर्व कालों में

समयानुसार स्वास्थ्य वर्धक होते हैं। देवी भागवत में कहा गया कि ''शरद ऋतु और वसंत ऋतु यमराज के नुकीले दाँत जैसा है'' श्रीराम नवमी भी वसंतऋतु यमराज के नुकीले दाँत जैसा है'', श्रीराम नवमी भी वसंतऋतु में ही मनाया जाता है। इसीलिए वसंतऋतु के समय में गला संबंधी बीमारियों के निवारण हेतु रामनवमी प्रसाद कालामिर्च, इलाची, गुड से बना हुआ शरबत एक दिव्यौषध के रूप में काम करता है। इसे आयुर्वेद शास्त्र निरूपण किया है। यह गुड शरबत (पानकम) श्री महाविष्णु को अत्यंत प्रीतिपात्र है। वैसा ही मूंगदाल का प्रसाद शरीर में अधिक ताप को कम करता है। पाचन शक्ति की वृद्धी होती है। देहकांति, ज्ञान की प्रतीक माने जानेवाले मूंगदाल को ही तेलुगु में 'वडपप्पु' कहते हैं। यह जो तेलुगु राज्यों में श्री राम नवमी के अवसर पर बनाए जानेवाले विशेष व्यंजन है। यह प्रसाद इस गर्मी के मौसम में लू लगने से हमें बचाती है। यह मूंगदाल बुधग्रह केलिए अत्यंत प्रिय है। ऋतुओं के संधिकाल में हमें कई बीमारियों से बचाने केलिए यह पानकम, वडपप्पु का प्रसाद एक दिव्यौषध के रूप में काम करते हैं।

### राम नाम का महत्व :

परम पावन राम नाम से जुडी हुई एक पौराणिक कथा प्रचलित है। कैलास पर्वत में एक दिन माता पार्वती ने भगवान शिव से इस प्रकार पूछी ''स्वामी। केनोपायेन लघुना विष्णोंम सहस्त्रकं'' कहती हुई विष्णु सहस्त्र नाम स्तोत्र का सूक्ष्म मार्ग बताने की विनती की। तब भगवान शिव ''हे पार्वती। मैं निरंतर वह फल केलिए यही जप करता हूँ'' कहकर ''श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्त्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने'' मंत्र का उपदेश किया है। इस मंत्र को तीन बार स्मरण करने मात्र से एक बार विष्णु सहस्त्र नाम पठन का फल प्राप्त होता है। इस के साथ-साथ भक्तजनों को शिवसहस्त्रनाम का फल भी मिल जाएगा।

'राम' शब्द का अर्थ है - 'रमनेवाला' इसलिए हम अपने हृदय में भगवान राम का नित्य स्मरण करते रहना चाहिए। इस से जीवन के समस्त संकट दूर हो जाऐंगे। शत्रुओं का नाश होगा। मनोविकार दूर हो जायेंगे। शत्रुओं का नाश होगा। मनोविकार दूर हो जायेंगे। आनंद की प्राप्ति होगी। जीवन सुखमय बनेगा। भक्तों का अटल विश्वास है कि काशी पुण्य क्षेत्र में रहनेवाले भक्तों को उनके मरणासन्न समय पर दायें कान में साक्षात् शिव जी ने यह राम तारक मंत्र का उपदेश करते हैं जिस से उनको मोक्षप्राप्त होता है।

'राम' शब्द में 'रा' अक्षर उच्चारण केलिए जब मुँह खुलते ही अपने अंदर से सभी पाप बाहर निकलकर राम नाम अग्नि ज्वाला में जल जाती है। 'म' अक्षर का उच्चारण करते समय मुँह (हों) बंद हो जाता है इस से बाहर के सारे पाप अपने शरीर में प्रवेश नहीं कर पाते। यही 'राम' मंत्र की महाशक्ति है।

युग पुरुष श्री राम सकल गुण संपन्न है। उन अनन्य गुणों में से अगर एक गुण का पालन भी सही रूप से हम कर सकते हैं तो हमारा जीवन सार्थक बन सकता है। ऐसे सकल गुण संपन्न श्रीराम जन्म दिन से जुडी श्रीरामनवमी पावन पर्व एक ओर युवा केलिए उपदेशात्मक संदेश एवं आध्यात्मिक विकास और दूसरी ओर स्वस्थ्य सूत्रों से अंतर्निहित है। यह पर्व हमारे लिए संकट निवारण मंत्र है और भावि पीढी केलिए दिशानिर्देशक हैं।

अनुक्रम - I

# श्रीमद्भगवद्गीता

*तेलुगु मूल -*
*श्री कुप्पा विश्वनाथ शास्त्री*

*हिन्दी अनुवाद - श्री रजीव रतन*
*मोबाइल - ९४४०९२६८३०*

**श्री**मद्भगवद्गीता के उपदेशों उस गीतामृत का आस्वादन करने से पूर्व उसके उद्देश्य सभी विष्यों को हमें बहुत ही स्थिरता से अवश्य जान लेने की आवश्यकता है। इस के लिए छन्दोग्योपनिरात की एक छोटी कथा जाननी होगी। एक बार ब्रह्माजी ने एक बड़ी सभा का आयोजन किया। उस सभा में सदस्य की तरह रहनेवाले और श्रोत की रहन वाले इस तरह तीन प्रकार के श्रोताओं को निमंत्रित किया गया। देवलोक से देवता गण, पाताल से राक्षस और मानव लोक से मनुष्यों को बुलवाया गया। सभी सभा में सम्मिलित थे। बहुत बड़ी सभा थी। बहुत से लोग बैठे थे! ब्रह्माजी के आगमन की प्रतीक्षा हो रही थी। उनका आगमन हुआ वे अपने स्थान पर विराजमान होते ही कार्यक्रम आरम्भ हुआ। सभी ने पूछा महाराज हमें यहाँ बुलाने का कारण क्या है? हमें कोई महान् उपदेश दीजिए सभी सोच रहे थे कि ब्रह्माजी कोई बड़ी बात बताने वाले हैं। उन्होंने ''द द द'' इन तीन वर्णों का उच्चारण किया। सभी ने सोचा ब्रह्माजी मंगलाचरण का जप कर रहे हैं ऐसा सोच रहें थे। ब्रह्माजी उठकर चले गये। ''द द द'' वर्ण का उपदेश देकर ब्रह्माजी चले गये। सभी अपने-अपने घर लौट कर ब्रह्माजी ने आज क्या उपदेश दिया सोचने लगे। देवतागण इकट्ठा हो ब्रह्माजी हमे क्या उपदेश दिये इस पर चर्चा करने लगे। उनको लगा कि ब्रह्मोजी हमारे मन तक जा सकते है। वे महान् देवता है अपने मन की बात जान लेते हैं हम कैसे है उन्हें पता हैं इसीलिए हमारे योग्य उपदेश उन्होंने दिया।

क्या उपदेश दिया होगा कि देवता गण कई पुण्य कार्यो के कारण ही देवता बन पाये इसी पुण्य के कारण हम में कुछ गर्व की भावना आ जाती है इसीलिए गर्व करना ठीक नहीं यही उपदेश दिया होगा। इस उपदेश का नाम है ''दाम्यता''। ''दाम्यता'' का अर्थ है इन्द्रियों को वश में रखना गर्व मत करों। सभी देवताओं ने यह निर्णय कर लिया कि ''दाम्यता'' रूपी हितोपदेश ब्रह्माजी ने हमें दिया। बचे दो ''द द'' वर्ण का क्या अर्थ हो सकता है। इसी पशो पेश में उन्होने निर्णय ले लिया कि एक ''द'' वर्ण हमारे

लिए तक और ''द'' वर्ण मनुष्यों के लिए तीसरा ''द'' वर्ण राक्षसों के लिए। अतः राक्षसों ने चर्चा आरम्भ किया। अतः काफी विचार विमर्श के बाद उन्होने निर्णय लिया कि हम में दया की भावना बहुत कम होती है युद्ध में भी हम बहुत क्रूरता प्रदर्शित करते हैं। इसीलिए ब्रह्माजी ने हमें ''दयत्व'' का उपदेश दिया। शेष दो ''द द'' वर्ण देव और मानव के लिए हैं यही उन्होंने भी सोचा। अंत में मानवों ने भी इसी विषय पर इकट्ठा हो चर्चा आरम्भ की उनका विचार था कि मानव बहुत ही स्वार्थी और कंजूस प्रकृति का होता है सभी इस बात से सहमत थे क्यों कि वेद में एक स्थान पर तपस्या क्या है कहने पर एक बड़ी लिस्ट दी गई। उस में एक वाक्य यह था कि ''एतत् फलु वावत परित्याहूः'', ''थस्वददातीतिः'' अर्थात तपस्या का अर्थ दान करना ''दान तपः'' ऐसे कई संदर्भ है जहाँ दान को तपस्या माना गया है।

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

### तिरुमल यात्री इनका आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- ☒ अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- ☒ भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- ☒ दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- ☒ मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- ☒ तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- ☒ पानी और बिजली को वृथा न करें।
- ☒ अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- ☒ पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- ☒ चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- ☒ भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- ☒ फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- ☒ तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- ☒ सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- ☒ विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

### तिरुमल में निषेधित कार्य

- ⃠ तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित हैं।
- ⃠ अन्य मतों का प्रचार न करें।
- ⃠ पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- ⃠ तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- ⃠ भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- ⃠ तिरुमल में प्रईवेट व्यक्तियों द्वारा केशखंडन या कल्याणकट्टाओं (क्षुरकशाला) को चलाना निषेधित है।
- ⃠ आवास को अनधिकारिक तौर पर देना या लेना मना किया गया है।

# श्रीसंप्रदाय के प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्यजी
## (भुतपुरी सरकार श्री रामानुजाचार्यजी)

- श्री प्रीति ज्योतीन्द्र के.अजवालिया
मोबाइल - ९६६४६१३०१३

सृष्टि के आरंभ में भगवान श्रीमन्नारायण ने प्रमुख चार देवताओं और ऋषि मुनियों को धर्म की स्थापना करने की आज्ञा दी, जिस में श्री महालक्ष्मीजी, श्री ब्रह्माजी, शिवजी और सनकादिक। भारतवर्ष में इन चारों द्वारा स्थापित धर्म चल रहा है।

श्री लक्ष्मीजी द्वारा स्थापित संप्रदास "श्री संप्रदाय" के नाम से प्रचलित हुआ, आगे चलकर ये संप्रदाय को श्री रामानुजाचार्यजी ने पूरे भारत में प्रकाशित किया, तब से श्रीसंप्रदाय रामानुज संप्रदाय के नाम से प्रचलित हुआ। विशिष्टाद्वैत सिद्धांत के अनुसार इस संप्रदाय को आगे बढ़ाने में श्री रामानुजाचार्यजी ने अपना पूरा जीवन लगा दिया। धर्म की स्थापना और प्रचार प्रसार करने हेतु ही श्री रामानुजाचार्यजी ने इस भूमि पर जन्म लिया।

### श्री रामानुजाचार्यजी के जन्म पर पुराणो ने की आगाही।

श्रीमद्भागवत के एकादश स्कंध के पाँचवें अध्याय, ब्रह्मसंहिता, हारित स्मृति, नारदिय पुराण, ब्रुहद ब्रह्मपुराण और श्री शठकोपसुक्त सहस्त्रगीथी में सभी जगह पर श्री रामानुजाचार्यजी के जन्म पर भविष्यवाणी की थी।

भविष्यवाणी के अनुसार ही श्री रामानुजाचार्यजी का जन्म वृतांत मिलता है।

### श्री रामानुजाचार्यजी का जन्म वृत्तांत

श्री केशवाचार्य ने श्रेष्ठ पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए दक्षिण भारत में मद्रास के समुद्र किनारे कुमुद सरोवर के तीर पर महान यज्ञ किया, यज्ञ के फलस्वरूप श्री पार्थसारथी भगवान ने केशवाचार्य के स्वप्न में आकर अपने पुत्र के रुप में जन्म लेने का वचन दिया।

वचन के अनुसार श्री पार्थसारथी भगवान ने कलियुग के ४११८ वर्ष, शक९३९,ई. सा.१०१७ में जब सूर्य मेष राशि, आद्रा नक्षत्र और करकट लग्न में ठीक मध्याहन में आये तब (तमिल मास अनुसार चैत्र शुक्ल पंचमी और गुजराती मास अनुसार वैशाख शुक्ल पंचमी) भगवान ने माता कांतिमती और पिता केशवाचार्य जी के यहाँ दक्षिण में भुतपुरी (पेरेमबुदुर) में जन्म लिया।

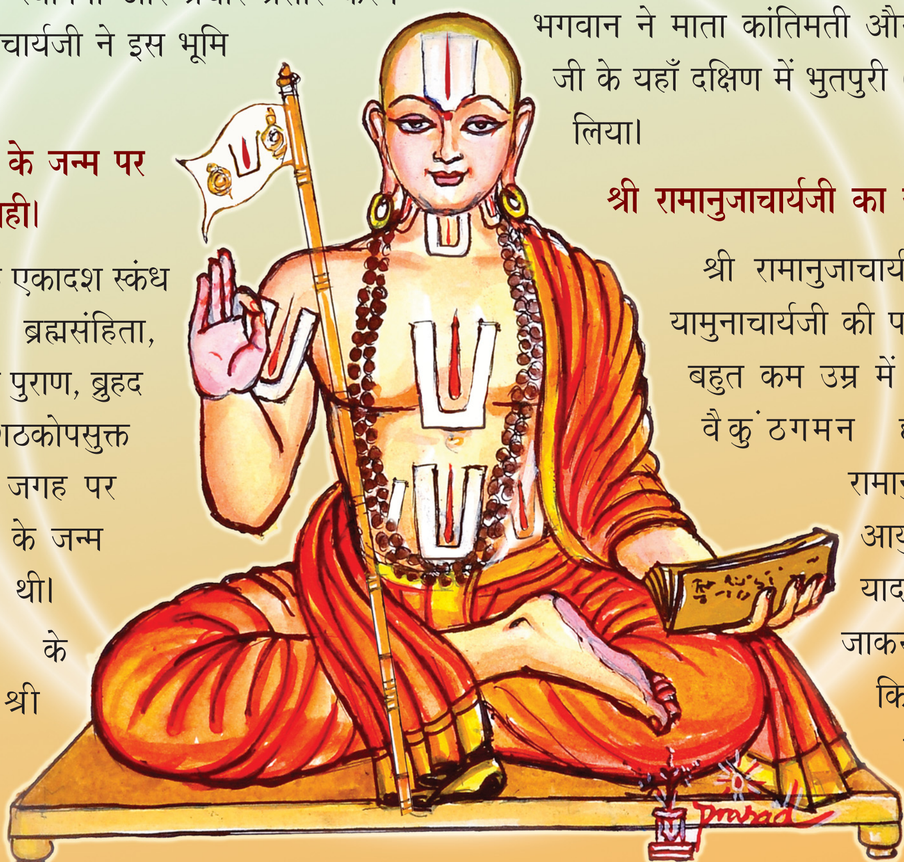

### श्री रामानुजाचार्यजी का जीवन चरित्र

श्री रामानुजाचार्यजी आलवंदार श्री यामुनाचार्यजी की परंपरा में था। उनके बहुत कम उम्र में अपने पिताजी का वैकुंठगमन हो गया। श्री रामानुजाचार्यजी ने कम आयु में कांची निवासी यादवप्रकाशजी के पास जाकर वेदो का अध्ययन किया। विध्या, चरित्र, बल और भक्ति में ये बालक बहुत ही पारंगत और

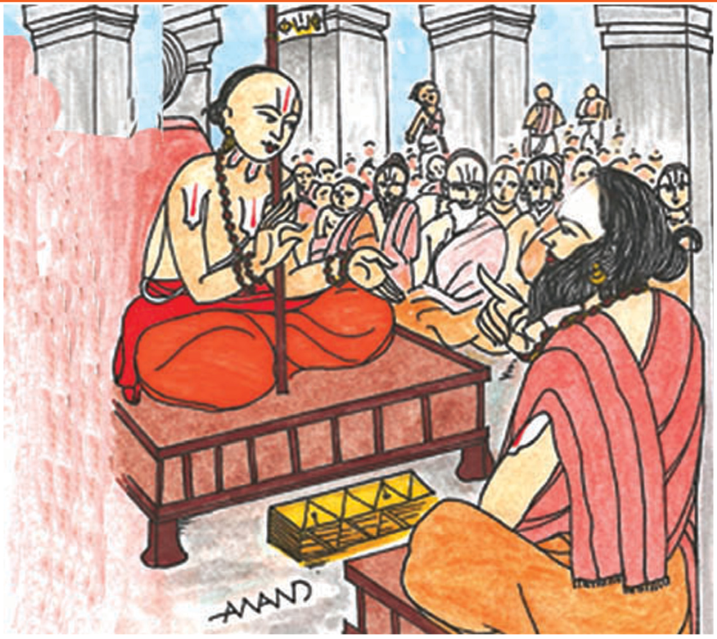

अद्वितिय था। इस बल से ही कांची की राजकुमारी को भूतप्रेत बाधा से मुक्त किया था। एक समय की बात है, श्रीयामुनाचार्यजी मृत्यु की घडी गिन रहे थे तब वहाँ रामानुजाचार्यजी पहुँचे इसी वक्त यामुनाचार्यजी परमधाम पहुँचे। ठीक इसी वक्त रामानुजाचार्यजी की नजर यामुनाचार्यजी के हाथ पर गई, हाथ की तीन अंगुली टेडी थी। रामानुजाचार्यजी इस संकेत को समझ गये और यामुनाचार्यजी की जो तीन इच्छायें थीं उसे पूरा करने का संकल्प किया, संकल्प के साथ ही तीन उँगली खुल गई। इस संकल्प के अनुसार समय पर रामानुजाचार्यजी ने (१) ब्रह्मसूत्र, (२)श्री विष्णुसहस्रनाम और (३) आलवंदार पर विशेष रूप से टीका लिखने का संकल्प लिया।

### श्री महापूर्णस्वामीजी के हाथों रामानुजाचार्यजी का पंचसंस्कार

यामुनाचार्यजी के प्रधान शिष्य श्री महापूर्णस्वामीजी के हाथों दोनों बाजुओं में शंख चक्र की सांप्रदायकि तप्त मुद्रा धारण की इस तरह दीक्षा धारण करके समाश्रित हुऐ। इसके बाद गृहस्थ जीवन का परित्याग करके श्री रंगम में सन्यासी के पास जाकर सन्यासी की दीक्षा ग्रहण की, इसके बाद तिरुक्कोट्टीथुर महात्मा ने अष्टाक्षर मंत्र (ॐ नमः नारायणाय) का दान दिया ये मंत्र को गुप्त रखने की सूचना दी। लेकिन रामानुजाचार्यजी ने अपने शिष्यों और श्री वैष्णवों के हित के लिए मंदिर के शिखर पर चढकर ये मंत्र का उच्चारण करते दान कर दिया। गुरु बहुत गुस्सा हुए और बोले कि इस गलती के लिए आप को नर्क में जाना पडेगा, तब रामानुजाचार्यजी बहुत प्रसन्न हुए और बोले की ये मंत्र से श्री वैष्णवजन परमपद प्राप्त करेंगे तो मैं नर्क जाने के लिए भी तैयार हूँ। इस बात से गुरु बहुत प्रसन्न हुए और आशीर्वाद प्रदान किया।

### यामुनाचार्यजी की तीनों इच्छा पूर्ण की

श्री रामानुजाचार्यजी ने आल्वारों द्वारा बताये गये भक्तिमार्ग का प्रचार करने के लिए पूरे भारत

की यात्रा की। इसके बाद गुरु यामुनाचार्यजी की तीनों इच्छा पूर्ण करने हेतु गीता और ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखे ये ''श्रीभाष्य'' के नाम से प्रचलित हुआ। बाद में श्री संप्रदाय के प्रधान शिष्य कुरेश स्वामी के दो पुत्र पराशर और पिल्लन द्वारा

आलवंदार के ऊपर विशेष टीका लिखवाया। इस तरह श्री रामानुजाचार्यजी ने आलवंदार श्री यामुनाचार्यजी की तीनो अंतिम इच्छा पुर्ण करके भारतवर्ष के श्री वैष्णवो का इस टीका से महान उद्धार किया।

## श्री रामानुजाचार्यजी द्वारा लिखित प्रधान ग्रंथ

(१) वेदार्थ संग्रह, (२)वेदांत सार, (३) वेदांत दीप, (४) श्री भाष्य, (५) गीता भाष्य, (६) गध्यत्रय, (७) नित्याराधन

## श्री रामानुजाचार्यजी के प्रिय चारधाम

(१) श्री कांचीपुरम, (२) श्री रंगम, (३) श्री मेलकोट और, (४) श्री तिरुपति इन चारों धाम में रामानुजाचार्यजी ने अपना जीवन बिताया।

## श्री रामानुजाचार्यजी द्वारा विशिष्टाद्वैत सिद्धांत

श्री रामानुजाचार्यजी द्वारा प्रचार हुआ कि सकल शास्त्रों के वचन पर भी कोई निर्णय पर आना चाहिए इसको सिद्धांत कहते है। यह विशिष्ट सिद्धांत धर्म को स्थापित किया।

इस धर्म में तत्वज्ञान का सार बताया भगवान की प्राप्ति के लिए (१) तत्व, (२)उपाय (३) फल की बात समझाया। इन में बात "श्री रामानुज रहस्य त्रय" में बताए है।

## श्री रामानुजाचार्यजी द्वारा परमपद सीडी

भगवान विष्णु ने जिस तरह विविध स्थानों पर तीन मंत्र का उपदेश करते हुए उपाय और उपेय को बताया उसी तरह श्री रामानुजाचार्यजी ने अपने परम आप्त शिष्यों के लिए तीन विविध स्थानों पर तीन मंत्रो का उपदेश देते हुए अपने श्री चरणों को उपाय और उपेय बताया जिसे "श्री रामानुज रहस्यत्रय" कहते हैं।

### (१) रामानुज मूल मंत्र

ॐ नमो रामानुजाय (कांची पुरम दिव्य देश में उपदेश किया)

### (२) रामानुज द्वय मंत्र

श्रीमत रामानुज चरणों शरणं प्रपध्ये श्रीमते रामानुजाय नमः (मेलकोटा के नजदीक मिथिला शालिग्राम में उपदेश दिया)

### (३) रामानुज चरम मंत्र

सर्व कर्माणि संत्यज्य रामानुज इति स्मर।

विभुतिं सर्व भुतेभ्यो ददाम्येतद व्रतं मम।

(इस मंत्र का उपदेश मेलकोटा दिव्य देश में दिया)

श्री रामानुज सहस्यत्रय में बताया गया है कि जो शिष्यों और श्री वैष्णव इस मंत्र का अनुसंधान करेगा उसे मोक्ष प्राप्त होगा।

इस तरह श्री पार्थसारथी भगवान के अंशज श्री रामानुजाचार्यजी ने सभी श्री वैष्णवजन और शिष्यों के लिए परमपद की सीडी प्रदान कर दी।

ऐसे जगतगुरु श्री रामानुजाचार्यजी के चरणों में कोटी कोटी वंदन।

यो नित्यमच्युत पदाम्बुजयुग्मरुक्म,
व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने।
अस्मदगुरोर्भगवतोस्य दयैकसिन्धोः
रामानुजस्य चरणौ शरणंप्रपधै।।

**जय श्रीमन्नारायण।**

# महिमान्वित श्रीराम के मंदिर - ओंटिमिट्टा

- डॉ.पी.बालाजी, मोबाइल - ८०७४५१९८२९१.

"हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायण के शवा।
गोविंद गरुडध्वज गुणनिये दामोदरा माधवा।।
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते।
वेंकुण्ठाधिपते यराचरपते लक्ष्मीपते पहिमाम्।।"

श्री राम विष्णु के अवतार थे। भगवान महाविष्णु के सातवें अवतार श्रीराम का अवतार है। बारह कलाओं के स्वामी श्रीराम का जन्म लोक कल्याण और मनुष्यों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करने के लिए हुआ था। वे करुणा, त्याग और समर्पण की मूर्ति माने जाते है। वे विनम्रता मर्यादा, धैर्य और पराक्रम में सर्वश्रेष्ठ हैं। भगवान श्रीराम ने चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को धरती पर पाप मिटाने के लिए अवतार लिए थे।

श्रीराम वैदिक संस्कृति और सभ्यता के आदर्श प्रतीक है, राम के जीवन में वैदिक संस्कृति का साकार रूप देखने को मिलता है। वाल्मीकि के समय में ही लोग राम को भगवान मानते थे। वल्मीकि के सैकडों वर्ष पश्चात हिंदी में तुलसीदास जी ने, तमिल में कंबन ने रामचरित लिखे। श्रीराम केवल भगवान ही मात्र नहीं वे सामान्य मानव की तरह रहने से लोक को रक्षा करते है। श्रीराम के आदर्श गुण विश्व कल्याण का मोक्ष मार्ग है। भारत में हर जगह में श्रीराम का मंदिर जरूर होते है। श्रीराम भारतीय संस्कृति और सभ्यता का एक आदर्श पुरुष है। श्रीराम के मंदिर केवल भारत में नहीं पूरे विश्व में हम देख सकते है। भारत में हर गली में श्रीराम का मंदिर मिल सकते हैं। श्रीराम के मंदिरों के द्वारा लोगों को अध्यात्मिक संदेश और समाजिक संदेश मिलते है। भारत में श्रीराम के अनेक महिमान्वित प्रसिद्ध मंदिर है उन में मुख्यतः अयोध्या का राम मंदिर; उत्तर प्रदेश त्रिप्तायरक श्रीराम मंदिर-केरल, कालाराम मंदिर-नासिक, राम राणा मंदिर-मध्यप्रदेश, कनक भवन मंदिर-अयोध्या, श्रीराम तीर्थ मंदिर-अमृतसर, कोदांडा रामस्वामी मंदिर-चिकमंगलूर, रामस्वामी मंदिर-तमिलनाडु, रघुनाथ मंदिर-जम्मू और सीता रामचंद्र स्वामी मंदिर-तेलंगाना।

इन मंदिरों में कोदंडराम मंदिर भी एक है। यह मंदिर भारत में आंध्रप्रदेश राज्य में कडपा जिल्ला के ओंटिमिट्टा नामक गाँव में है। यह बहुप्राचीन प्रसिद्ध

मंदिर है। इस मंदिर को लग-भग १६ वीं सदि में निर्माण किया था। यह मंदिर कडपा से २५ किलोमीटर दूर है।

महिमान्वित कोदंड रामस्वमीजी का मंदिर १६वीं में चोल और विजयनगर राजाओं ने निर्माण किया था। विश्व विख्यात मंदिर के बारे में अनेक विद्वानों ने प्रशांसा करते अपने विद्वत्ता प्रदर्शित किया था। संकिर्तनाचार्य ताल्लपाक अन्नमाचार्य ने यहाँ आकर भगवान श्रीराम के बारे में अनेक कीर्तन गा कर अपना भक्ति को व्यक्त किया था। १६५२ में प्रंच के यात्री श्री जीन-बटिस्ट टावेर्नियर ने मंदिर को देखकर मंदिर के सुंदर निर्माण के बारे में प्रशंसा किया था। भगवान श्रीराम के महिमा की विशिष्टता के बारे में ओबन्न नामक भक्त ने अनेक राम भक्ति गीता को गाया था। इतनी प्रसिद्ध महिमान्वित श्रीराम का मंदिर में हर दिन समस्त पूजा कार्यक्रम आयोजित कर रहे है। अब मंदिर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के द्वारा सकल कार्यक्रमों का निर्वाह कर रहा है।

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्ति प्रदं
माया मोहमला पहे सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भवत्यागा हन्ति।
ये ते संसारपतंग धोरकि रर्णदहन्ति नो मानवः।।

यह श्रीराम-चरित-मानस पापों का हरण करने वाला, सदा कल्याणकारी, विज्ञान और भक्ति को देनेवाला, माया मोह का नाश करनेवाला, निर्मल श्रम रुप जल से परिपूर्ण तथा मंगलमय है। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक तथा मंगलमय है। भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है क्यों कि अपने जीवनकाल में कई कष्ट सहते हुए भी मर्यादित जीवन का सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों को नहीं त्यागा और मर्यादा में रहते हुए जीवन व्यतीत किया। इसलिए उन्हें उत्तम पुरुष का स्थान दिया गया।

भारत में भगवान राम का जन्म-दिन उत्साह के साथ मनाया जाता है। श्रीराम का जन्मदिन आंध्रप्रदेश के कडपा जिल्ला में होनेवाले ओंटिमिट्ट में कोदंड रामस्वामी मंदिर में भी बेहद हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। जिस में दूर-दूर से भक्तगणों के अलावा साधु-सन्यासी भी पहुँचते है और राम जन्म का उत्सव मनाते है। इस दिन विशेष तौर पर श्री राम के साथ माता जानकी और लक्ष्मण जी की भी पूजा होती है।

लोकाभिरामं रण रंग धीरम्, राजीव नेत्रम्
रघुवंश नाथं।

करुण्य रुपम् करुणाकरं यम्, श्रीरामचंद्रम्
शारणं प्रभाते।।

भगवान श्रीराम का दर्शन, भाषण, स्पर्श और वार्तालाप बहुत ही मधुर है, भगवान का जो मूर्ति है, वह मधुर है इसलिए उन्हें माधुरी मूर्ति कहते हैं। इनके सारे चेष्ट मधुर है। भगवान की लीला, भगवान का स्वरूप, भगवान की वाणी, भगवान के गुण, भगवान का नाम सब के सब मधुरान्वित है।

# पुराणों में है हमारा विज्ञान

- श्री ज्योतीन्द्र के अजवालिया
मोबैल :९८२५११३६३६

आजकल आविष्कार का युग चल रहा है। रोज रोज नया-नया आविष्कार हम को देखने मिलता है। आविष्कार देख के हम को वैज्ञानिक पर गर्व महसूस होता है कि हमारे वैज्ञानिकों ने देश के लिए बहुत बडा आविष्कार करके देश को बहुत बडा योगदान दिया है। हम ने कभी यह सोचा है कि वैज्ञानिकों ने किस माध्यम से ये आविष्कार किए है?

हम को नहीं पता है इस की वजहा कभी भी हम ने पुराणों को ठीक तरह से पढा ही नहीं, वैज्ञानिकों जो भी आविष्कार करता है ये सब बातें हमारे पुराणों में वेदो में बहुत पहले से वर्णित है।

आज इस लेख में ऐसी कई विज्ञन संबंधी विषयों की जानकरी दी है, जो पहले से ही पुराणों में उल्लेखित है।

वास्तव में हमें अपने वैज्ञानिकों के साथ-साथ ही हमारे पुराणों, ऋषि-मुनियों और हम सब के इष्टदेव परम परमेश्वर पर गर्व होना चाहिए।

आज हम में से अधिकतर लोग वेदों के अनंत विज्ञान भंडार से अनभिज्ञ हैं। इस में कोई शक नहीं है कि पश्चिमी विज्ञान के अभूतपूर्व अविष्कारों से हम सभी लाभान्वित हुए हैं, लेकिन हमारे वेद-पुराणों में पहले से ही कई ऐसी तकनीकी चमत्कारों का जिक्र है, जिनकी खोज आज भी वैज्ञानिक कर रहे हैं। पौराणिक कथाओं के मुताबिक सृष्टि में जो हो रहा है, वो वेदों और पुराणों के अनुसार है।

एक आम इन्सान के लिए वेद और पुराण के ज्ञान को समझ पाना कठिन था, इसलिए रोचक कथाओं के माध्यम से वेद के ज्ञान की जानकारी दी गई। आधुनिक विज्ञान की खोज अनादि काल से ही वेदों में उपलब्ध है। हम ने अपने ज्ञान और सभ्यताओं को विज्ञान की दृष्टि से कभी देखा ही नहीं। मिसाल के तौर पर, वैज्ञानिकों ने जिस हिंग्स बोसोन से मिलते-जुलते कण की खोज का दावा किया है, उस बिग बैंग सिद्धांत का सबसे पहला जिक्र वेदों में ही किया है। सृष्टि के सृजन की शुरुआत के साथ-साथ कई अन्य आश्चर्यचकित करने वाली विषयों का वर्णन वेदों में है।

द्रष्टांत के तौर से बात करु तो...

आज के समय में कोई न कोई वजह से कई माताओं के पेट में गर्भ नहीं बनता, विज्ञान ने तरक्की करके टेस्ट ट्युब बेबी सीस्टम का आविष्कार किया, विज्ञान की इस खोज से कई निसंतान दंपती माता पिता बन सकते है।

इसके अनुरूप इसके जैसी ही कई घटनाएँ पुराणों में वर्णित है। आइए ऐसी एक घटना पर नजर डाले।

### सरोगेसी

भ्रूण को एक गर्भ से दूसरे गर्भ में स्थानांतरित करने की प्रक्रिया को सरोगेसी कहते है। भगवत गीता में एक ऐसी घटना का वर्णन है जिस में इस तकनीक का जिक्र आता है। जब वासुदेव की पत्नी देवकी के

सभी पहले छह भ्रूणों को कंस ने मार डाला था, तब सातवीं गर्भावस्था के समय भगवान विष्णु ने देवकी के भ्रूण को योगमाया की मदद से वासुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया था। शेषनाग के इस अवतार को श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के नाम से जाना जाता है।

## मानव क्लोनिंग

महाभारत में इस बात का वर्णन है कि गांधारी २ साल तक बच्चे को जन्म नहीं दे सकी थी, जिस के बाद उन्होंने आवेश में आकर अपने गर्भ को पीटना शुरु कर दिया। पागलपन में इस तरह गर्भ को पीटने के कारण गांधारी ने मांस के लोथड़े जन्म दिया। इस के बाद महर्षि व्यास को बुलाया गया। महर्षि व्यास ने इस लोथड़े के १०१ टुकड़े कर उन्हे घी के डिब्बों में डाल दिया। महर्षि व्यास को आधुनिक तकनीक का ज्ञान था जिस से उन्होंने इन-वेटरो-फेर्टिलाइजेशन के जरिए १०१ बच्चों को जन्म दिया। आज विज्ञान इस तकनीक को मानव क्लोनिंग कहता है।

## जेनो-ट्रांसप्लॉन्टेशन

पुराणों में जिक्र है कि बाल गणेश गजमुख कैसे बने। विज्ञान आज इस तकनीक को जेनो-ट्रांसप्लॉन्टेशन का नाम दे चुका है, जिस में एक प्रजाति के अंग को दूसरी प्रजाति में प्रत्यारोपित किया जाता है।

## सेल री जनरेशन

हमारी पौराणिक कथाओं में ऐसी कई कहानियों का उल्लेख है, जिन में देवता और राक्षस अपने शरीर के अंगों को पुनः विकसित कर लिया करते थे। आज वैज्ञानिक मनुष्यों, जानवरों और पौधों में कोशिकाओं को पुनः उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं।

## ब्रेन सर्जरी

सिर में फ्रैक्चर हड्डी के क्षतिग्रस्त टुकडों को खोपड़ी में छेद कर निकालने का अभ्यास भारत में कांस्य युग में किया जाता था। वैज्ञानिकों ने हाल ही में खोपड़ी की चोट की सफल सर्जरी के सबसे पुराने मामले की खोज की है।

वास्तव में आज के युग में जो भी आविष्कार और खोज है वो पुराणों की देन है। हमे अपने पुराणों का नियमित रुप से गर्व के साथ अध्ययन करना चाहिए।

इन अमूल्य ग्रंथो का अध्ययन हमारे जीवन की कई कठिनाइयों को दूर करने की क्षमता रखता है।

**जय श्रीमन्नारायण**

# श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी
व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी
मोबाइल - ९३६४३२४८४४

सूर्येन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यसौरि-
स्वर्भानुकेतुदिविषत्प्रधानाः।
त्वद्दासदासचरमावधिदासदासाः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ।।१८।।

**पदार्थ -**

सूर्य, इन्दु भौम बुध वाक्पति काव्य सौरि स्वर्भानु केतु - सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु (ये)

दिविषत् परिषत् प्रधानाः- देवसमूहों में मुख्य,

त्वत् दास - आपके दासों के,

चरमावधि दास - सीमा (भूत) दासों को भी,

दासाः - दास होकर रहते हैं, श्री वेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्

**भावार्थ -** हे वेंकटाद्रि के नाथ देवताओं में प्रधान नवग्रह देवता आपके दास, दास के भी दास, दासों के दास होकर आपके द्वार में (प्रतीक्षा में) रहते हैं। आपको यह सुप्रभात हो।

**विशेषार्थ -** नवग्रहों को भगवान के दासों के चरमावधिदास कहने से, वे (ग्रह) दूसरों को उनके (कुण्डली) के स्थिती के अनुसार कभी-कभी अशुभ फलों को देते हैं। फिर भी भगवान के दासों को तो कुण्डली के अनुसार न देकर, दास होकर, सर्वदा शुभ फलों को ही देते हैं। यह भाव व्यक्त होता है। हे उदार आपके दास को यमभट, चोर जैसे रहते (डरते) हैं। इस श्रीपराकालसूरि की, बृहत्सूक्त की ८-१०-७ की सूक्ति के यमदूत भगवदासों के विषय में चोर जैसे डरकर छिप जाते हैं। ''विधयश्च वैदिकाः त्वदीयगम्बीरमनोनुसारिणः'' (स्तोत्ररत्न - २०) श्रीयामुनाचार्यजी की सूक्ति, वैदिक विधि भी भगवद्दासों के गम्भीर हृदय के भावों के अनुसार चलते हैं (अर्थ बताते हैं) ऐसी वास्तविक स्थिति रहती हैं। इसके आधार पर नवग्रह भी भगवद्दासों के दास होना क्या आश्चर्य है? कोई आपत्ति नहीं हैं ।।१८।।

त्वत्पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्षनिजान्तराङ्गाः।
कल्पागमाकलनयाऽऽकुंलतां लभन्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ।।१९।।

**पदार्थ -**

त्वत् पाद धूलि - आपके चरण के रज के,

भरित स्फुरित - भरने से शोभित,

उत्तमाङ्गाः - मस्तक वाले आपके दास,

स्वर्ग अपवर्ग - स्वर्ग में तथा मोक्ष में,

निरपेक्ष निजान्तरङ्गा - अपेक्षा (कामना) रहित मन वाले (होकर)

कल्प आगम आकुलनया - प्रलय (होने) की संभावना से,

आकुलतां लभन्ते - व्याकुलचित्त होते है। श्री वेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

**भावार्थ -** हे वेंकटाद्रि के नाथ! आपके दर्शन कर आपके श्रीचरण रज को सिर पर धरकर, उसी से स्वर्ग व मोक्ष को भी नहीं चाहते हुए। (तिरस्कार कर) आपके दास, इस कलियुग के प्रत्यक्ष देव आप, इस कलियुग के समाप्त होने पर (अपने धाम) परम पद को चले जायेंगे, इस भय से रहते हैं। आप को यह सुप्रभात हो।

**विशेषार्थ -** भगवच्चणारविन्द युगल के रुप में, भगवान के फाल में धारण किये जाने वाले

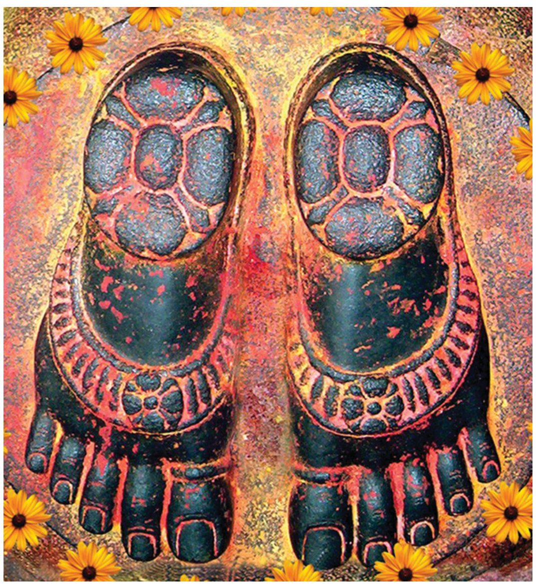

भीमसेनी कपूर के चूर्ण को ही यहाँ पादधूलि कहते हैं। भक्त लोग ही भगवत्पादारविन्द चिन्हों के समान उर्ध्वपुण्ड्र धारण कर सकते हैं। भगवान को कैसा धारण करा सकते हैं। भगवान को कैसा धारण करा सकते हैं? इस शंका का, ''उर्ध्वपुण्ड्रतिलकं बहुमानात् किं बिभर्षि वरद स्वललाटे'' (श्री कूरनाथ स्वामी के वरदराज स्तव-२६) ''हे परम कृपालु! आपके भक्तों को ऊर्ध्वगति (परमपद) को प्राप्त कराता है। इस गौरव के कारण (श्वेत मृत्तिका से) एस ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक को आप अपने ललाट पर धारण करते हैं क्या? श्रीकूरनाथ स्वामीजी की यह श्रीसूक्ति समाधान देती हैं। जब श्री वेंकटेशजी के भीमसेनी कपूर से उर्ध्वपुण्ड्र धारण कराते हैं अथवा (अभिषेक के समय) उतारते है। तब वह चूर्ण भगवान के पादों (चरणों) में गिरते हैं, ऐसा अनुभव के रहने से यह चूर्ण 'पादधूलि' कहा जाता है। ऐसा भी मान सकते हैं। शुक्रवार में धारण किये इस ऊर्ध्वपुण्ड्र को अगले शुक्रवार में प्रसादी के रुप में भक्तों को देना, भक्त लोग उसे स्वीकार (खाना) करना और मस्तक पर धारण करना, आज भी श्रीवेंकटाद्रि में अनुभव सिद्ध हैं। कल्याऽगमाऽऽकलनया आसुलतां लभन्ते - भगवान से 'हे स्वामी श्रीवेंकटाद्रि में अनुभव सिद्ध हैं। कल्याऽगमाऽऽकलनया आकुलतां लभन्ते - भगवान से 'हे स्वामी श्री वेंकटेशजी! आप जहाँ भी हमेशा वास करेंगे वही मैं भी वास करूं 'ऐसा शिवजी पूछते हैं। तब घनश्याम श्रीवेंकटेशजी जवाब देते हैं कि ''इस पर्वत में प्रलय आने तक में वास करुँगा। हे महादेव आप भी इस पर्वत के निचले भाग में (सानु में) आग्नेय दिशा में वास करें।'' वराह पुराण के प्रथम भाग में अठारहवें अध्याया में ऐसा कहा गया है। कहने का यह भाव है कि इस उक्ति को ध्यान कर, चिरञ्जीव मार्कण्डेय आदि मुनि, प्रलय के आने पर, श्री वेंकटेशजी परमपद को वापस पधार जायेंगे। तब वेंकटेशजी का रूप (अर्चारुप) धारण कर, नित्य सूरियों के बरावर वानर व्याध को भी दर्शन दे रहे भगवान के 'सौशील्य'' आदि गुणों का जो अनुभव हो रहा है उस से वंचित हो जायेंगे, ऐसा व्याकुलचित्त होते हैं ॥१९॥

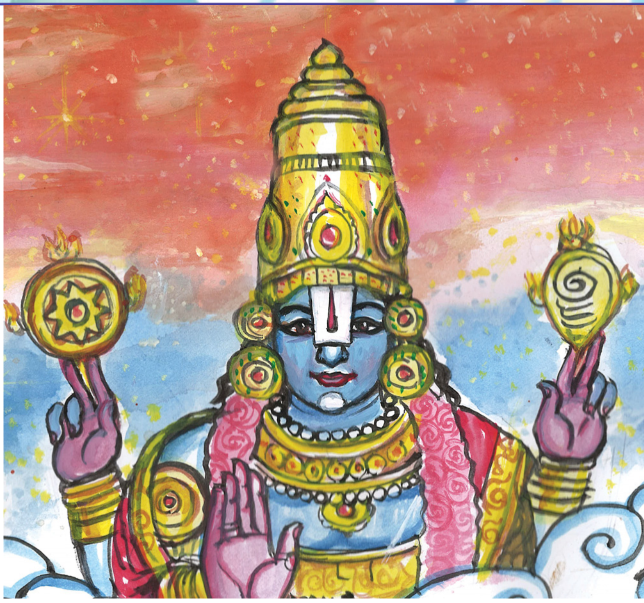

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः ।
मार्त्य मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२०॥

**पदार्थ -**

स्वर्ग अपवर्ग पदवीम् - स्वर्ग प्राप्त कराने वाले धर्म मार्ग, मोक्ष को प्राप्त कराने वाले भक्ति मार्ग, दोनों को,

परमां - पूर्ण सीमा तक,

श्रयन्तः - प्राप्त किये,

मर्त्याः - मनुष्य,

त्वत् गोपुर अग्र शिखराणि - आपके (मंदिर) गोपुर के ऊपर रहे कलशों को,

निरीक्षमाणाः - देखते हुए,

मनुष्यभुवनते - ईस धरातल में ही,

मतिं - (रहना है) बुद्धि को,

आश्रयन्ते - प्राप्त करते हैं। श्री वेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

**भावार्थ -** दान, धर्म, भक्ति प्रपत्ति आदि को पूर्णतया अनुष्ठान कर, इस शरीर के छूटने के बाद, स्वर्ग व मोक्ष को अवश्य प्राप्त करेंगे, ऐसा निश्चयवाले भी आपके गोपुर के कलशों का दर्शन करते ही स्वर्ग व मोक्ष में आशा को छोड कर, आगे भी इस धरातल में जन्म लेकर, आपके दर्शन की इच्छा से, यहाँ रहते हैं। आप को यह सुप्रभात हो।

**विशेषार्थ -** इस श्लोक में यह कहा जाता है कि साधनानुष्ठान को पूरा कर स्वर्ग या मोक्ष को प्राप्त करने की योग्यता को पूर्णतया प्राप्त करने पर भी उनकी उपेक्षा कर श्रीवेंकटेशजी के गोपुर के कलशों के दर्शन के योग्य इस धरातल में जन्म (लेने की) इच्छा करते हैं।

श्रीशठकोपसूरि को ''परमपद (श्री वैकुण्ठ) में भगवान के दिव्य चरणाविन्दों को मस्तक पर धारण कर आनन्दानुभव करना है।'' ऐसी आशा करते हुए उनको हमेशा यह (धरातल पर ही) स्मरण कर द्रवित होकर आह्लादित होना छोड़कर विवेकियों का मन, तीनों लोक एवं मोक्ष ही भले प्राप्त हों, इनको पुरुषार्थ मानेगा क्या? (अर्थात इस धरातल में रहते हुए, श्री वैकुण्ठ में प्राप्त होने वाले आनन्द को, मानसिक अनुभव करना ही पर्याप्त है।) इस श्रीवृत्त प्रबंध (दूसरी गाथा) की सूक्ति उन्हीं की बृहदन्तादि (५३ वीं गाथा) ''हे रक्ताक्ष भगवन! आपके श्रेष्ठ कल्याण गुणों को अनुभव करने की मनोवृत्ति से बढकर आप बहुत प्रशंसा करते हुए, देने वाला परमपद, आपके भक्तों को रसावह होगा क्या?'' (परमपद के आनंद से बढकर आपके कल्याण गुणों का मानसिक अनुभव करना रसावह है) की इस श्रीसूक्ति, श्री भक्तिसारमुनीन्द्र की श्री छन्दवृत्त की (१०८ वीं गाथा), ब्रह्मा, शिव, इन्द्रलोक प्राप्त होने पर परमपदनुभव प्राप्त होकर बडे वैभव से रहने पर भी भगवान से मिलने की आशा करते हुए यही (पृथ्वी पर) रहना छोडकर अन्य विषयों को मैं चिन्तन करूँगा क्या? (अर्थात ब्रह्मरुद्रेन्दों के लोकों में प्राप्त होने वाला

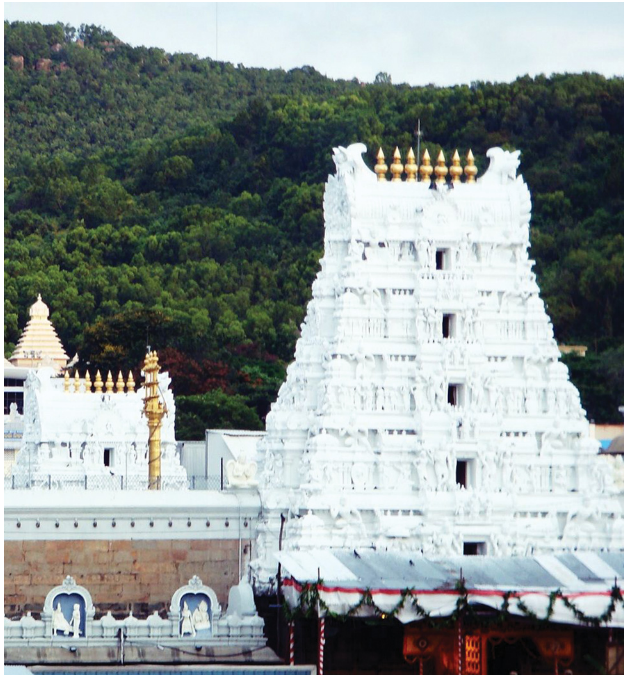

तथा परमपद में भी प्राप्त होने वाला आनन्दानुभव से इसी धरातल में रहते हुए भगवान से मिलने की आशा करने से प्राप्त होने वाला आनन्दानुभव ही उत्कृष्ट है।) इस श्री सूक्ति, श्री भक्तांघ्रिरेणुसूरि की श्रीमाला प्रबंध की (दूसरी गाथा) हे अच्युत! नित्यसूरियों से श्रेष्ठ! आदि नामों के अनुसंधान (संकीर्तन) कर आनंदानुभव करने के सिवाय, परमपदानुभव को भी मैं नहीं चाहता। इस श्रीसूक्ति की (श्री भक्तांघ्रिरेणु की अमलनादिपिरान प्रबंध की आखिरी गाथा) श्री रंगजी को शोभित करने वाला आभूषण और अमृत श्री रंगनाथ का दर्शन करने वाली मेरी आँखे और किसी को नहीं देखेंगी।) इस श्रीसूक्ति (एवं इन दिव्य सूरियों के इस दिव्य सूक्तियों में) बताये जैसा इस श्लोक में (त्वद्गोपुराग्र) जिक्र किये अधिकारी (भक्त) लोग स्वयं स्वर्ग या परमपद को प्राप्त करने की पूर्ण योग्य होने पर भी उनकी उपेक्षा कर श्री वेंकटेशजी के मंदिर के गोपुर के कलशों के और श्रीवेंकटेशजी को दर्शन करने अपेक्षित, इस धरातल में जन्म लेने की इच्छा करते हैं ॥२०॥

क्रमशः


**तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।**

## लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

**प्रधान संपादक,**
**सप्तगिरि कार्यालय,**
**ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,**
**तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।**

# श्री प्रपन्नामृतम्

## (२०वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

(गतांक से)

### श्रीरामानुजाचार्य का मन्त्रर्थ प्राप्ति के लिये गोष्ठीपुर जाना

एक दिन श्रीरामानुजाचार्य श्रीपूर्णाचार्य स्वामी की सन्निधि में जाकर साष्टांग प्रणिपात करके बोले- ''भगवान्! मुझे तो आचार्य श्रीयामुनाचार्य जी के दर्शन नहीं मिले; अतः श्रीमन् मेरी रक्षा के लिये कुछ रहस्यात्माक तत्वों का उपदेश कीजिए। इसे सुनकर श्रीपूर्णाचार्य स्वामीजी बोले कि-द्वयमन्त्र की महिमा अवर्णनीय है और मूलमन्त्र तो वेदों का सार माना ही गया है। अपने आचार्य की वन्दना करके द्वयमन्त्र का उच्चारण करनेवालो-स्त्री, पुरुष, मूर्ख, निन्दित प्राणी भी संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। इस तरह द्वयमन्त्र की महिमा का वर्णन करके श्री पूर्णाचार्य स्वामीजी ने श्री रामानुजाचार्य को मूल मंत्र का उपदेश देकर गीतार्थसंग्रह, पुरुषनिर्णय, सिद्धित्रय नामक विविध भगवान् यामुनाचार्य प्रणीत ग्रन्थों का उपदेश दिया। इसके बाद उन्होंने रामानुजाचार्य से कहा कि गोष्ठीपुर में गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी का अवास है। वे सकल शास्त्र तत्त्वज्ञ हैं। उनको श्रीयामुनाचार्य स्वामी ने बहुत से रहस्यों का उपदेश दिया है। अतः आप उन्ही के यहाँ जाकर उन रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करें। श्रीपूर्णचार्य स्वामीजी की वाणी सुनकर श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी उसी समय श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की सन्निधि में जाकर साष्टांग प्रणाम करके बोले कि आप मुझे मूलमन्त्र का अर्थ बतलाकर मेरी रक्षा करें। श्रीरामानुजाचार्य की वाणी श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी बोले कि- ''यतीन्द्र! मूलमन्त्र का महत्व इतना अच्छा नहीं। आप जितनी शीघ्रता से मन्त्रार्थ जानना चाहते हैं उतना जल्दी मन्त्रार्थ मैं बता नहीं सकता हूँ, क्यों कि मर्त्यलोक में संप्रति मन्त्रार्थ का कोई अधिकारी नहीं दिखायी पड़ता।'' इस तरह रामानुजाचार्य से कहकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी मन्त्रार्थ बताने से विमुख हो गये। उन्हें मन्त्रार्थोपदेश से विमुख देखकर श्री रामीनुजाचार्यजी श्रीरंगम् लौट आये। इस के बाद भगवान् श्रीरंगनाथ का महोत्सव देखने की इच्छा से श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी जब श्रीरंगम् आये तो अर्चकों द्वारा उन्हें श्रीशठकोप तीर्थ, तुलसी प्रसाद दिलवाकर श्रीरंगनाथ भगवान् बोले कि- श्रीगोष्ठीपूर्ण! आप मन्त्रार्थज्ञ माने जाते हैं। अतः आप मेरे श्रीरामानुजाचार्य को मन्त्रार्थोपदेश कर दें।''

भगवान् श्रीरंगनाथ की वाणी सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी बोले-भगवन् मन्त्रर्थोपदेश के लिए आप ही की आज्ञा है-

*इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय न मानिने।*
*नचाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति।।*
*संवत्सरं तदर्ध वा मासं मासार्द्धमेव वा।*
*परीक्ष्य विविधोपायैः कृपया निस्पृहो बदेत्।।*

(अर्थात् रहस्यार्थोपदेश तपस्या रहित, भक्तिहीन, मानी, अजिज्ञासु, भगवन्निन्दक को नहीं करना चाहिए। सांसारिक विषय वासनाओं से विरक्त तत्त्वज्ञानी को चाहिए कि वह किसी को भी रहस्यार्थोपदेश करने से पहले उसकी एक वर्ष या छः महीना, या एक माह अथवा आधा महीना कम से कम परीक्षा करले।)

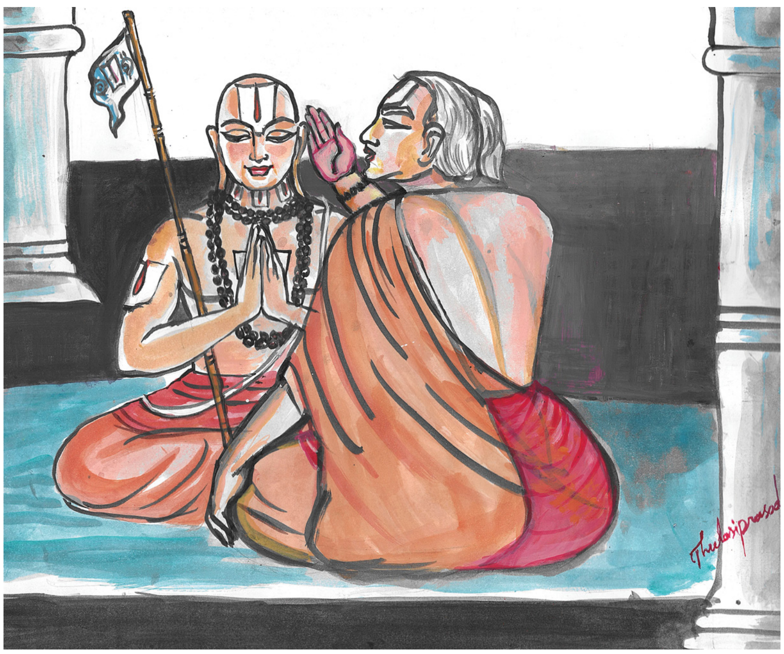

श्रीगोष्ठोपूर्णस्वामी जी की उपर्युक्त वाणी सुनकर श्रीरंगनाथ भगवान् बोले कि श्रीरामानुजाचार्य में संभावित कोई भी दोष नहीं है। उन्होंने ''वासुदेव; सर्वमिति'' विज्ञापन के फलस्वरूप भगवान् नारायण ही हमारे सब कुछ हैं वह आत्मसाक्षात्कार कर लिया है। अतः इन्हें आप मन्त्रार्थोपदेश अवश्य कर दें। भगवान् का यह आदेश सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य को गोष्ठपुर बुलाकर चले गये। किन्तु जब श्रीरामानुजाचार्य जी वहाँ गये तो मन्त्रार्थोपदेश की गरिमा ज्ञापित करते हुए उपदेश करने से विमुख हो गये। इस तरह भगवान् श्रीरामानुजाचार्य को मन्त्रार्थ प्राप्ति के लिए गोष्ठपुर में २८ बार जाकर लौट जाना पड़ा। इसके बाद एकबार श्रीगोष्ठीपूर्णस्वामीजी,यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य को अवमानना करके लौटा दिया। वहाँ से संतप्तमन होकर श्रीरामानुजाचार्य लौटकर दुःखी रहने लगे। उनकी इस दशा को किसी श्रीवैष्णव ने जाकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी को सुनाया। इस बात को सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी अपने एक शिष्य को भेजकर श्रीरामानुज स्वामी को कहवा दिये कि वे अकेले यहाँ मन्त्रोपदेश सुनने के लिए आयें। इसके बाद श्रीरामानुजाचार्य ने सम्पूर्ण वृत्तान्त भगवान् रंगनाथ को सुनाकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी के यहाँ प्रस्थान किया।

**।। श्रीप्रपन्नामृत का २०वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।**

क्रमशः

# तिरुमल
# श्री वेंकटेश्वर स्वामी जी का
# वसंतोत्सव
# अप्रैल २४ से २६ तक

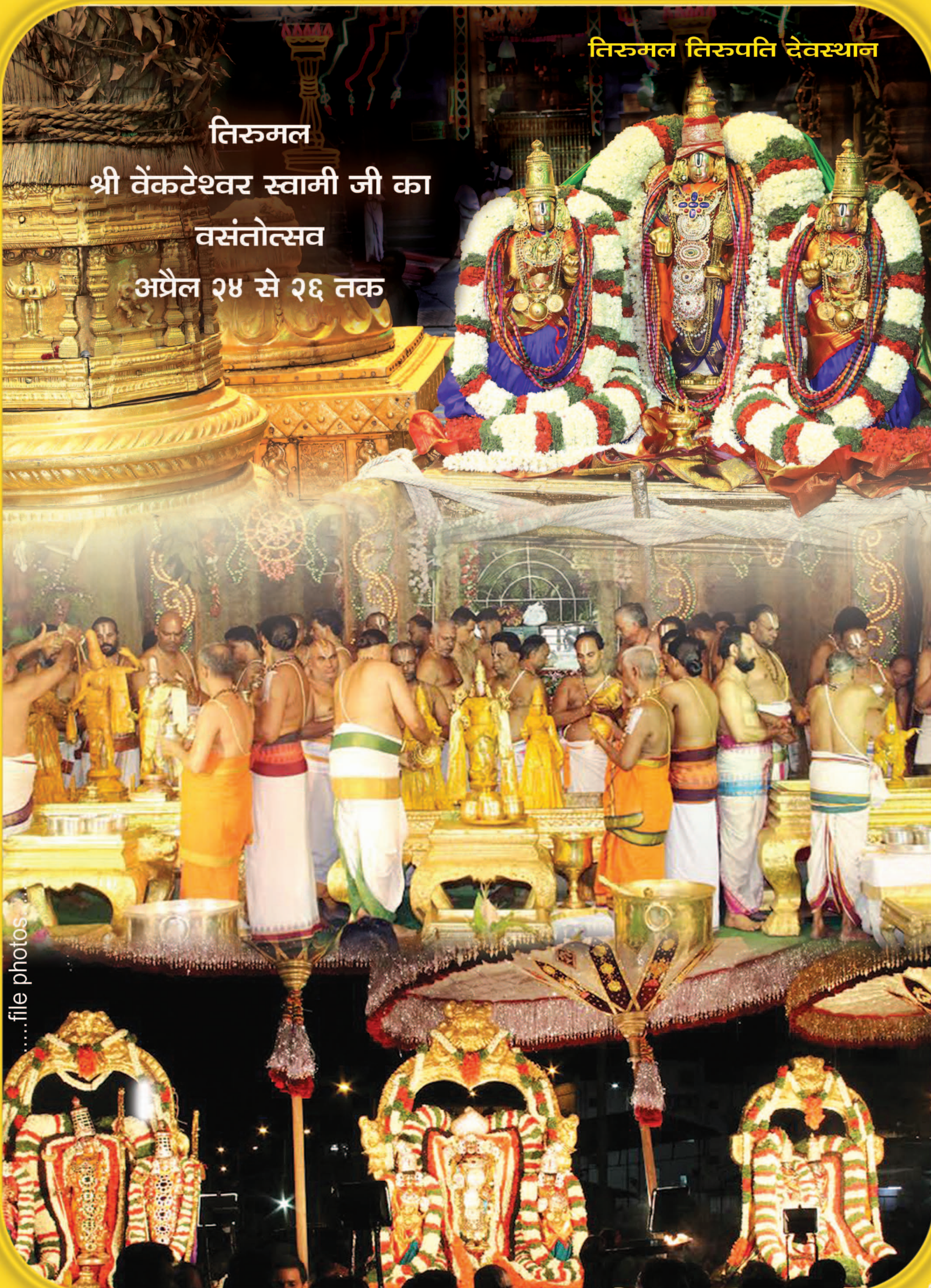

# गोविन्दनामक्रम में श्रीरामानुजनामावली

अष्टभुजसेवक रामानुज!
अनन्तरूप रामानुज!
अनाथरक्षक रामानुज!
अमृतमूर्ति रामानुज!
अद्भुतरूप रामानुज!
अधर्मशत्रो रामानुज!
आमुदल्वन् रामानुज!
आश्रितरक्षक रामानुज!
आनन्दरूपा रामानुज!
आदिशेषा रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराजा!
यतिराजा श्रीरामानुज!
आपद्बान्धव रामानुज!
इलैयाळ्वारे रामानुज!
उदयवरे श्रीरामानुज!
एम्बारुनाथा रामानुज!
करुणान्तरङ्ग रामानुज!
कलिध्वंसक रामानुज!
कल्पवृक्षसम रामानुज!
दासपावन रामानुज!
धर्मसंस्थापक रामानुज!
दाशरथिगुरु रामानुज!
दीनजनोद्धार रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराजा!
यतिराज श्रीरामानुज!
दीनशरण्य रामानुज!
दीनदयालो रामानुज!
दीनबन्धो रामानुज!
देवराजप्रिय रामानुज!
काषायांबर रामानुज!

कारुण्यजलधे रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराजा!
यतिराज श्रीरामानुजा!
कामधेनू रामानुज!
कामादिहरा रामानुज!
कामितफलदा रामानुज!
कान्तिमतीसुत रामानुज!
कूरेशपूजित रामानुज!
केशवतनय रामानुज!
कोयिलण्णन् रामानुज!
गद्यत्रयकर रामानुज!
गोपीमोक्षद रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराजा!
यतिराजा रामानुज!
गोदाग्रजा श्रीरामानुज!
तिरुप्पुलियाळ्वारे रामानुज!
त्रिदन्डधारि रामानुज!
दयासिंधो रामानुज!
पुराणपुरुष रामानुज!
पुरुषपुङ्गव रामानुज!
पुण्डरीकाक्षा रामानुज!
पेरियनम्बिच्छात्र रामानुज!
बलभद्र जय रामानुजा!
रामानुज श्रीयतिराजा!
यतिराजा श्रीरामानुज!
भक्तजनप्रिय रामानुज!
भवभयहृर रामानुज!
भक्तमन्दार रामानुज!
देशिकेन्द्र रामानुज!
नित्यनिर्मल रामानुज!

परमदयालो रामानुज!
पश्चाचार्यपदाश्रित रामानुज!
परांकुशसेवक रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराजा!
यतिराज श्रीरामानुजा!
परमहंस रामानुज!
पावनपुरुष रामानुज!
पापविमोचन रामानुज!
फणिशरीर रामानुज!
प्रियंवद श्रीरामानुज!
यतिराज श्रीरामानुज!
यामुनाप्रिय रामानुज!
रङ्गनाथपुत्र रामानुज!
लक्ष्मणमुने रामानुज!
लीलामानुषविग्रह रामानुज!
वरदराजसुत रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराज!
यतिराज श्रीरामानुज!
वीराधिवीर रामानुज!
वैष्णवप्रिय रामानुज!
शङ्खचक्रप्रद रामानुज!
शारदाशोकनाश रामानुज!
शिष्टरंजना रामानुज!
शिष्टपरिपाला रामानुज!
श्रीभाष्यकर्ता रामानुज!
श्रीरामानुज रामानुज!
श्रीलक्ष्मणार्या रामानुज!
श्रीरङ्गप्रिय रामानुज!
रामानुज श्री यतिराज!
यतिराजा श्रीरामानुज!
भक्तवत्सल रामानुज!

भागवतप्रिय रामानुज!
भाषासन्नुत रामानुज!
भुवनपावन रामानुज!
भूरिदयानिधे रामानुज!
भूतपुरीश रामानुज!
मन्नाथ जय रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराज!
यतिराज श्रीरामानुज!
मन्त्रप्रकाश रामानुज!
मुक्तिदायक रामानुज!
मेषाद्रासंभव रामानुज!
श्रीरामसोदर रामानुज!
श्रीरङ्गाश्रित रामानुज!
श्रीकृष्णाग्रज रामानुज!
श्रीभाष्यकार रामानुज!
शेल्वपिल्लजनक रामानुज!
श्वेतवर्ण रामानुज!
शेषावतार रामानुज!
शोकनाशन रामानुज!
सहस्त्रनामन् रामानुज!
सत्यसङ्कल्प रामानुज!
सज्जनप्रिय रामानुज!
साक्षीभूत रामानुज!
सुदीर्घबाहो रामानुज!
सुगुणाकर रामानुज!
सूरिशिखामणे रामानुज!
सौशील्यभूषा रामानुज!
क्षान्तिवर्धन रामानुज!
क्षीरपुरीश रामानुज!
रामानुज श्रीयतिराज!
यतिराजा श्रीरामानुज!

२५.०३.२०२१ को ति.ति.दे.न्यास मंडली की ओर से विशेष रूप से आमंत्रित्र हुए श्री मल्लादि विष्णु (विजयवाडा केन्द्रीय शासन सभा सदस्य) जी को श्री वारी चित्र पट को समर्पित करते हुए ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वि.धर्मारेड्डी जी.

तिरुमल क्षेत्रपालक रुद्र को महाशिवरात्री के संदर्भ में संपन्न हुआ विशेष पूजा।

ति.ति.देवस्थान की ओर से श्री कालहस्तीश्वर ब्रह्मोत्सव में ति.ति.दे. न्यासमण्डली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी जी, ति.ति.देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस. जवहरेड्डी, आई.ए.एस. जी ने रेश्मी वस्त्रों को समर्पित करने का दृश्य

मत्रांलय श्री गुरु राघवेन्द्रस्वामी जी का ४२६ वॉ वर्धन्ति के संदर्भ में ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वि.धर्मारेड्डी जी ने शेषवस्त्रों को समर्पित किया।

ति.ति.दे. हाल ही में तिरुमला में आयोजित श्री अनंताल्वार १६७ वॉ अवतारोत्सव का दृश्य श्रीश्रीश्री पेद्दजीयर स्वामी, श्रीश्रीश्री चिन्नजीयर स्वामी, ति.ति.दे. के हिन्दू धर्म प्रचार परिषद कार्यदर्शी आचार्य के राजगोपालन जी और अनंताल्वार के वंशज इस कार्यक्रम में भाग लिए।

# श्री मूकांबिका मंदिर

डॉ हेच एन गौरी, मोबाइल - ९७४२५८२०००

श्री मूकांबिका मंदिर कर्नाटक के उडुपी जिले कुंदापुर तालुका के कोल्लूरु क्षेत्र में स्थित है। कोल्लूर मूकाम्बिका देवी मंदिर कर्नाटक और केरल राज्य के लिए सब से प्रसिद्ध, पवित्र और महात्वपूर्ण तीर्थस्थनों में से एक है। घने जंगलों के बीच ऊँची पहाडियों पर यह मंदिर स्थित है। यहाँ प्रकृति की रमणीयता बहुत ही मनोहर है। मूकाम्बिका देवी का मंदिर कर्नाटक के परशुराम क्षेत्र के 'सात मुकातिसथल' तीर्थ स्थानों- कोल्लुर, उडुपी, सुब्रह्मण्य, कुंबाशी, कोटेश्वरा, शंकरनारायण और गोकर्ण में से एक है। सौपर्णिका नदी के तटों और हरी-भरी कोडचद्री पहाड़ी से घिरे सुंदर वातावरण में स्थित यह मंदिर दर्शन करने हर साल विविध प्रदेशों से अनेक भक्त आते हैं। यह क्षेत्र प्रकृति सौंदर्य तथा धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। मलयालम में माता मूकंबिका को 'मुकांबि' और 'मूग्बंगि' कहलाती है।

माता के बारे में स्कंद पुराण में उल्लेख मिलता हैं। स्कंद पुराण के अनुसार माता मूकंबिका के ज्योतिर्लिंग का रूप प्रकृति और पुरुष के एकीकरण से माना गया है। यहाँ माता स्वयंभू है। माना जाता है कि साक्षात परम शिव अपने पुत्र सुब्रमण्यस्वामी को माता के महत्व के बारे में बताने पर स्वयं सुब्रमण्यस्वामी यहाँ आकर तप किया था।

यहाँ प्राप्त प्राचीन शास्त्र, शासन और प्रमाण के मुताबिक १० वीं सदी से देवी शक्ति केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ प्राप्त १४८७ ईसवी के प्राचीन शासन में शक्ति के मूल रूप के बारे में विवरण दिया गया है। इस में श्री मूकांबिका देवी को लिंग के रूप में आदिशक्ति और सृष्टिकर्ता, सकल जीवों की रक्षा करने वाली कहा गया है।

## पौराणिक गाथा :

पुराणों के अनुसार कृत युग में, तीसरे मन्वंतर में महा तपस्वी कोल महर्षि कोडचाद्रि पर्वत में तपस्या कर रहे थे। कोल महर्षि यहाँ तपस्या करने से इस क्षेत्र का नाम कोल्लूरु पड़ा। उस समय उनको कंहासुर नामक राक्षस सताता था। स्वयं कंहासुर और अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए घोर तप करने लगा। उसके तप से डरकर, उसकी दुराचारी इच्छाओं को रोकने के लिए ऋषियों और देवताओं ने आदि शक्ति से प्रार्थना की।

आदिशक्ति ने सरस्वती के रूप में उसके बोलने की क्षमता को बंद किया और जब भगवान शंकर उसके सामने प्रत्यक्ष होने पर वह मूक बनकर कुछ नहीं मांग सका। तब से वह मूकासुर कहा जाने लगा। इस घटना से ऋषियों और देवताओं पर वह क्रोधित हो गया और कोल महर्षि सहित देवताओं और ऋषियों को अनेक रूपों से सताने लगा। यज्ञों को नाश करने लगा। इसलिए हवन के द्वारा दिए जाने वाले हविश देवताओं तक नहीं पहुँच पाता था। ऋषियों, देवताओं और त्रिमूर्तियों ने आदिशक्ति माता अंबिका से मूकासुर की संहार करने के लिए अनेकों प्रार्थन की, ताकि जगत में शांति स्थापित हो सके। आयोनिजा आदिशक्ति अंबिका ने सब देवताओं की शक्ति को एकीकरण करके मूकासुर की संहार के लिए खड़ी हो गई। माता के भव्य अयोनिजा रूप को देख कर स्वयं त्रिमूर्तियाँ आश्चर्यचकित हो गये। आदिशक्ति और कंहासुर के बीच घोर युद्ध चला। माता अंबिका ने अपनी असीम शक्ति से मूकासूर का वध किया और सब के कष्टों को दूर किया। माता के अयोनिजा रूप को देखकर सब देवता अनन्य भक्ति से स्तुति करने लगे। आकाश से फूलों की वर्षा बरसाई। मूकासूर सम्हार के कारण माता 'मूकांबिका' कहलायी। सब ऋषियों ने माता को इसी कोडचाद्री पर्वत पर वास करने का आग्रह किया। माता ने उनकी विनती को स्वीकार किया। तब से कोडचाद्री पर्वत पर रहकर भक्तों का पालन करने लगी। माता से वध हुए मूकासुर, माँ की कृपा से मारणकट्टे नामक प्रदेश में ब्रह्म लिंगेश्वरा के नाम से पूजित होने लगा है।

### श्री शंकराचार्य से प्रतिष्ठापन :

माना जाता है कि अनेक वर्षों के बाद जगतगुरु श्री आदिशंकराचार्य जब देश पर्यटन के लिए निकले थे, तब कोडचाद्री पहाडियों पर तपस्या की और देवी उनके सामने प्रकट हुई और उन से उनकी इच्छा के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि वेक्षदेवी को अपनी जन्मभूमि केरल में अपने इच्छित स्थान पर आराधना हेतु स्थापित करना चाहते हैं। देवी उसकी इच्छा से सहमत हो गई और एक शर्त रख दी कि वे उनके पीछे चलेंगी और जब तक कि वे गम्य स्थान तक नहीं पहुँच जाते, उन्हें पीछे नहीं देखना चाहिए। शंकराचार्य भी इस शर्त को मान लिया। लेकिन शंकराचार्य का परीक्षण करने के लिए देवी जानबूझकर रुक गई। जब शंकराचार्य देवी की पदचाप नहीं सुन पाए तो अचानक पीछे घूम गए। पर देवी उसके पीछे ही थी। शर्त के उल्लंघन से माता वहीं रुक गई और शंकराचार्य से कहा कि वे उन्हें मूर्ति के रूप में वहीं स्थापित कर दें। जगतगुरु शंकराचार्य ने १२०० वर्ष पूर्व ही देवी का प्रतिष्ठापन किया था।

### माता का स्वरूप :

कोल्लूरु क्षेत्र में मूकांबिका देवी शक्ति, महालक्ष्मी और सरस्वती तीनों के एकीकृत रूप है। इसलिए यहाँ आने वाले भक्तो को देवी की शक्ति पर अपार विश्वास है। मूकांम्बिका मंदिर में तीनोंरूपों की पूजा की जाती है। सुबह यहाँ महाकाली के रूप में, दोपहर में महालक्ष्मी के रूप में और शाम में महा सरस्वती के रूप में पूजा की जाती है। यहाँ देवी ज्योतिर्लिंग के रूप में शिव और शक्ति दोनों को समेटकर रहती है। शिव और शक्ति दोनों प्रकृति और पुरुष का संकेत है। पूर्व दिशा की ओर स्थित इस ज्योतिर्लिंग के बीच में एक स्वर्ण रेखा है जो शक्ति का एक चिन्ह है। कहा जाता हैं कि छोटा हिस्सा जागृत शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है जो कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव के त्रिमूर्ति रूप है और बड़ा हिस्सा सरस्वती, पार्वती और लक्ष्मी के रचनात्मक स्त्री शक्ति का प्रतीक है। इस ज्योतिर्लिंग

के पीछे स्थित देवी मूकाम्बिका की सुंदर पंचलोहे (पाँच तत्वों की मिश्रित धातु) की मूर्ति को श्री आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित किया गया था। देवी की मूर्ति को स्थानिक राजा हलुगल्लू वीर संगय्या ने बनवाया। मंदिर में मूकंबिका देवी श्री चक्र पर पद्मासन में दिखाई पड़ती है। माना जाता है कि आरंभ में देवी का रूप उग्र था। शंकराचार्य जब छोटे थे और उसका आगमन इस प्रांत में हुआ तब देवी के उग्र रूप से भयभीत हो गये थे। माता से प्रार्थना करके प्रसन्न करवाने के बाद माता ने शांत रूप का धारण किया। चार हाथोंवाली देवी के ऊपर के दो हाथों में शंख, चक्र है और नीचे के एक हाथ से अभय मुद्रा और दूसरे हाथ से वरद मुद्रा दिखाई पड़ती है।

### देवी मूकांबिका के आभूषण :

देवी के मंदिर में भक्तों द्वारा कृतज्ञतापूर्वक अर्पित किए गए अनेक गहनों का संग्रह है। उन में पन्ना अत्यंत मूल्यवान है। मंदिर में जुलूसवाले सोने के दो मूर्तियाँ है। पहले एक मूर्ति खोने के बाद रानी चेन्नम्मा द्वारा मूर्ति दी गयी थी।

बाद में पहलीवाली भी मिली। देवी के सोने के मुखौटे को विजयनगर साम्रज्य द्वारा दिया गया था। केलाडी के चेन्नम्माजी द्वारा ज्योतिर्लिंग के सोने के मुखौटे को भेंट के रूप में दिया गया था। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एम.जी.रामचंद्रन ने एक किलो सोने के तलवार को भेंट के रूप में दिया था। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री गुंडूराव जी ने भी देवी को चांदी के तलवार को समर्पित किया।

### पूजा विधि :

मूकंबिका की पूजा विधि ब्राम्हणों द्वारा आगम पद्धति के अनुसार किया जाता है। नित्य पूजादि कर्म केरल के आचार के अनुसार किया जाता है। माना जाता है कि यहाँ के आचार अनुष्ठान आदि श्री शंकराचार्य से बताए गए हैं। आरंभ में केवल स्वयंभू लिंग की अर्चना की जाती थी। बाद में जब श्री शंकराचार्य से मूर्ति का प्रतिष्ठापन हुआ तब से मूर्ति की पूजा भी की जाती है। हर दिन तीन बार अभिषेक पूजा और नैवेद्य विधि पूर्वक किए जाते हैं। सुबह की पूजा ५:०० बजे शुरु हो जाती है। इसके बाद देवी की मूर्ति की श्री बली के लिए दो बार परिक्रमा की जाती है। एक बार मूर्ति को व्यक्ति के भुजाओं पर बिठाकर और दूसरी बार पल्लकी में बिठाकर जुलूस द्वारा परिक्रमा की जाती है। पुनः दोपहर को आरती और नैवेद्य किया जाता है। संध्या की पूजा में दीपाराधना के बाद देवी के मंदिर के चारों ओर स्थित देवी के परिवार देवताओं को दीपाराधना की जाती है। इसके अलावा हर शुक्रवार शाम को ५:०० बजे माता को सरस्वती मंडप में सुशोभित कर नैवेद्य समर्पित किया जाता है और आरती चढ़ाई जाती है। हर दिन तीन बार देवी की पूजा संपन्न होते समय श्रुति, मौरी, समेल, ढोल और एक बड़ा भेरी (नगारी) को बजाते हैं। वाद्यकारों को यह वृत्ति वंशानुगत प्राप्त है। मंदिर के बड़े घंटे और छोटी घंटी को किसी को भी नहीं बजाना चाहिए। इन को मंगल आरती के समय तथा विशेष संदर्भ में बजाये जाते है। गर्भ गृह में पुरुषों को कमीज और बनियान को पहनना निषिद्ध है। माता की मूर्ति की पूजा और अलंकार तथा ज्योतिर्लिंग को अभिषेक किया जाता है।

मंदिर में पूजन की निर्मल्यदर्शन, उषा पूजा, मंगल आरती, बली, उच्च पूजा, महा नैवेद्य, महा मंगल आरती बाली द्वार बंद, द्वार का खुलना, प्रदोष पूजा, सलाम मंगल आरती और नैवेद्यम, मंगल आरती, बली मंगल आरती, बली उत्सव, सरस्वती मंटप में अष्टवधान पूजा, कषाय मंगल आरती, मंदिर द्वार बंद होता है। देवी भक्त टिप्पू सुलतान के स्मरणार्थ यहाँ सलाम पूजा भी की जाती है। प्रसिद्ध गायक जेसुदास हर वर्ष अपने जन्म दिन पर यहाँ संगीत आराधना करते है।

### मंदिर वास्तु :

इस अद्भुत ऐतिहासिक मूकांबिका मंदिर को केरला वास्तु शैली में निर्मित किया गया है। यहाँ देवी का प्रतिष्ठापन १२०० वर्ष पूर्व श्री शंकराचार्य से होने के बाद वहाँ के

स्थानीय राजाओं ने इस क्षेत्र की विकास की। माता मूकंबिका बैंदूर राजाओं की कुलदेवता थी।

आलय प्रांगण में प्रवेश करने के तुरंत बाद २० फूट का दीपस्तंभ दिखाई पड़ता है। उसके आगे दीपस्तंभ थोड़ा छोटा, स्वर्ण से लेपित ध्वज स्तंभ दिखाई पड़ता है। ध्वज स्तंभ के दर्शन के बाद भक्तगण गर्भ गृह प्रवेश करते हैं। गर्भगृह में दो प्राकार है। गर्भगृह का शिखर, अनेक शताब्दियों पहले, स्थानीय राजा से दान के रुप में दिए गए सोने से लेपित है। मुख्य द्वार से अंदर जाने पर माँ की दाई ओर कालभैरवेश्वर की मूर्ति है। देवी के गर्भ गृह के पीछे पश्चिम भाग में जहाँ शंकरचार्य ने तपस्या की थी, वहाँ शंकराचार्य का पीठ है। मंदिर के दक्षिण भाग में दस हाथों से युक्त दशमुख बलमुरी गणपति का मंदिर है। गणेश की सूंड दाई ओर है, यही इसकी विशेषता है। मंदिर के बाहरी प्राकार में कांसे की मूर्ति वीरभद्र जो तलवार पकड़कर मूकांबिका के पुत्र के रूप में इस क्षेत्र का पालन कर रहा है। गर्भगृह में माता का कुवर गणेशजी उत्तरी, दिशा की ओर मुख करके बैठा है। मंदिर के प्रांगण में सरस्वती मंदिर है। रात को जुलूस के बाद माता की प्रतिमा को सरस्वती मंदिर में रखा जाता है। मंदिर के गर्भगृह के चारों ओर स्थित देवी के परिवार देवताओं में श्री सुब्रह्मण्य, श्री वीरभद्र, श्री पंचमुखी गणपति, श्री चंद्रमौलीश्वरा, श्री प्रणालिंगेश्वरा, श्री नांजुडेश्वरा, श्री तुलसी गोपालकृष्ण मंदिर शामिल हैं।

ऐसा माना जाता है कि देवी का मूल स्थान कोडचद्री शिखर (३८८०) पर है, परंतु सामान्य लोगों के लिए वहाँ तक जाना दुस्तर था, इसलिए शंकराचार्य ने मंदिर को कोल्लूरु में पुनस्थापित किया।

### मूकंबिका मंदिर के आसपास के अन्य देवताओं के मंदिरः

इस क्षेत्र में मंदिर के आसपास अन्य कई देवताओं के मंदिर है। वे ये हैं -

श्री चौडेश्वरी मंदिर, श्री संप्र गणपति मंदिर, श्री सिद्धेश्वर मंदिर, श्री बलमुरि बीदि गणपति मंदिर, श्री गोपाल कृष्ण मंदिर, श्री मारियम्मा मंदिर और श्री गड़ी मास्तियम्मा मंदिर। इस क्षेत्र से हनुमान जी का भी संबंध है। हनुमान जी हिमालय से संजीविनी लेकर लंका को जाते समय संजीवनी पर्वत के कुछ छोटे दुकडे गिरकर कोडचाद्री पर्वत पर गिरे थे, इससे यहाँ औषधीय सस्य अनेक मिलते हैं।

### सौपर्णिका नदी :

कालभैरव और उमामहेश्वर के मंदिर के बीच स्थित पानी का झरना सौपर्णिका नदी के जल का स्त्रोत है। स्थल पुराण के अनुसार सुपर्ण (गरुड़) ने अपनी माता के मुश्किलों के निराकरण के लिए इस नदी के तट पर देवी की तपस्याँ की थी। जब देवी साक्षात्कार हुई तो सुपर्ण ने प्रार्थना की कि आगे से नदी को सुपर्ण के नाम से जाना जाएँ। तब से यह नदी 'सौपर्णिका' कहा जाने लगा। जब नदी बहती है तो यह ६४ विभिन्न औषधीय पौधों और जड़ों के तत्वों को अवशोषित करती है, इसलिए इस में नहाने से सब बीमारीयाँ दूर हो जाती है। इसलिए इस नदी में स्नान करना पवित्र माना जाता है। यह नदी संपरा के नाम से कोल्लूरु के आस-पास पश्चिम की ओर बहती है और मरावंथे में महाराजा स्वामी (वराहस्वामी) मंदिर के समीप है।

### कोल्लूर के आस-पास की प्रकृति :

कोल्लूर गाँव घने सतत हरित जंगल के मध्य स्थित है। इस जंगल में कई जंगली जानवर और पक्षी यहाँ रहते हैं तथा अन्य छोटे गाँवों से घिरा हुआ है। मंदिर से कोडचाद्री पर्वत पश्चिमी घाट की अन्य चोटियों के साथ एक सुंदर दृश्य नजर आता है। कोल्लूर और कोडचाद्री के बीच अंबावन नामक जंगल है जो दुर्भेद्य है और जहाँ दूर्लभ पौधें भी देखे जा सकते है। मंदिर से लगभग ४ कि.मी. की दूरी पर अरासिंगुडी नामक एक सुंदर झरना है। यह झरना कोडचाद्री की तलहटी में स्थित है।

### पर्व तथा उत्सव :

इस क्षेत्र में अनेक पर्व और त्योहारों का भक्ति पूर्वक आचरण किया जाता है। नवरात्रि के समय में नवाक्षरी कलश, चंडिका होम, रथोत्सव, पूर्ण कुंभाभिषेक आदि किए जाते हैं। नवंबर में नवरात्रि उत्सव के दौरान मंदिर भक्तों के भीड़ से भर जाता है। जन्माष्टमी भी यहाँ के लोकप्रिय त्योहार हैं। यह माना जाता है कि स्वयंभु लिंग इसी दिन प्रकट हुआ था।

नवरात्रि उत्सव के अंतिम दिन पर विद्यारंभ या छोटे बच्चों को उनकी मातृभाषा के अक्षरों की पढ़ाई सरस्वती मंटप में की जाती है। हर दिन दोपहर और शाम में निःशुल्क प्रसाद स्वरूप अन्नदान प्रदान किया जाता है।

हर वर्ष मीना मास उत्तरा नक्षत्र के दिन ध्वजारोहण होता है। मूला नक्षत्र के दिन रथोत्सव होता है। उत्तरा नक्षत्र के दिन ध्वजारोहण से लेकर मूला नक्षत्र तक रथोत्सव ९ दिन मनाया जाता है। जेष्ठ मास अष्टमी के दिन तथा अन्य पर्वो पर देवी की विशेष पूजा या अलंकार आदि किए जाते हैं।

नवंबर, दिसंबर माह में वन भोजन, एक विशिष्ट पद्धति का आचरण किया जाता है। इस दिन आम्ल वृक्ष के तले जाकर विशेष होम तथा धात्री पूजा की जाती है। खीर, अन्न तथा सांबार को नैवेद्य किया जाता है। इसके अलावा अष्टबंध ब्रह्माकलशोत्सव मनाया जाता है।

वृश्चिका मास की अमावस्या के दिन पर कार्तिक दीपोत्सव मनाया जाता है। उसके पहले दिन देवी को जुलुस में सौपर्णिका तट पर ले जाकर पूजादि किए जाते हैं। यह 'वोडु बली' (भूतादि को भगाना) कहा जाता है। एक कुंभ ये छेद करके पानी लाने को कहते हैं जो कष्टसाध्य है। पूजा करने के बाद प्रधान अर्चक बली के रूप में अन्न, सफेद कद्दू, सहजन के पत्र को डालते हैं। पूजा के बाद पूजा में भाग लिए हुए सबको भोजन परोसा जाता है।

हर महीने पूर्णिमा और अमावस्या के दिन 'बीदि उत्सव' का आचरण किया जाता है।

जनवरी में ९ दिनों का संगीत उत्सव मनाया जाता है। प्रसिद्ध गायक जेसुदासजी से सरस्वती के कीर्तन गाए जाते हैं जो कर्णानंदभरित होता है। संगीतार्चना में त्यागराज कृत 'पंचरत्न गायन' के कीर्तन भी गाये जाते है।

देवी मूकांबिका जो आदिपराशक्ति है, हम सब की रक्षा करती है। माँ की शक्ति अपार है और महिमा अनन्य है। इससे संबंधित एक कथा है- मंदिर में शहद और अन्य पदार्थ डालकर बनाया गया 'पंचाकज्जाया' को प्रसाद के रूप में देते हैं। प्राचीन काल में देवी को नैवेद्य करने के बाद पंचाकज्जाया को मंदिर के एक कुएँ में डालते थे। इसको देखकर एक अनपढ़ केरलवासी एक बार कुए में छिपकर उस प्रसाद को खाया था। उस प्रसाद की महिमा से वह महान पंडित बन गया। इसी विश्वास से इस क्षेत्र में अनेक लोग अपने बच्चों से अक्षर अभ्यास करवाते हैं ताकि वे विद्या संपन्न या धन संपन्न हो सके।

### आवास की सुविधाएँ :

कोल्लूर में ठहरने के लिए कई स्थान है। मंदिर का आडलित मंडली का सोपर्णिका गेस्ट हाउस है। श्रृंगेरी का शंकर वसतिगृह, रामकृष्ण आश्रम का अतिथि मंदिर है। यहाँ अन्य अनेक वसतिगृह भी है। कुल मिलाकर वहाँ पर लगभग ४०० कमरे हैं। आम भक्तों के लिए कमरों के किराये वहन करने योग्य हैं। बस स्टैंड परिसर में एक आगंतुकों के लिए एक शयनगृह भी है।

### कैसे पहुंचे :

कोल्लूरू क्षेत्र मंगलुरू से १३० किलोमीटर, कुंदापुर से ३० किलोमीटर दूर पर है। मंगलुरू के पास हवाई अड्डा है। निकटतम रेलवे स्टेशन कोंकण रेलवे मार्ग में कुंदापुर और मूकाम्बिका रोड (बायंदूर) है। बेंगलूरु से कोल्लुरु पहुँचने के लिए बस सेवा उपलब्ध है। कोल्लूर पहुँचना के लिए नजदीक तालूका कुंदापुर और बैंदुर है जहाँ से टैक्सी बुक कर सकते हैं।

# उगादि पर्व का वैशिष्ट्य

*डॉ.एस.हरि,*
*मोबाइल - ९३९८४५४१६८.*

'उगादि' दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह आँध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और महाराष्ट्र में नववर्ष के तौर पर मनाया जाता है। इस त्यौहार का संबंध सृष्टि के आरंभ से जोडा जाता है। यह पर्व चैत्र मास के प्रथम दिन मनाया जाता है। इसीलिए इसे उगादि या युगादि भी कहते हैं। यह त्यौहार नववर्ष की शुरुआत के रूप में जाना जाता है।

शास्त्रों में उगादि त्यौहार को बडा महत्व दिया गया है। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि का आरंभ इसी दिन किया था और सूर्य की पहली किरण भूमि पर इसी दिन उत्पन्न हुई थी। उगादि के दिन ही त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र का राज्यभिषेक हुआ था। इसी दिन द्वापर युग में शांतगुण संपन्न युधिष्टिर सिंहासन पर आसीन हुए थे। कलियुग में सम्राट शालिवाहन का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। इस तरह यह त्यौहार उज्वल भविष्य की शुभकामना के शुभ अवसर पर मनाया जाने लगा। इसी गौरवशाली परंपरा को बरकरार रखते हुए आज भी यह त्यौहार मनाया जाता है।

उगादि चैत्र मास के पहले दिन मनायी जाती है। वास्तव में चैत्र मास मार्च-अप्रेल के बीच पडता है। उस समय वसंत ऋतु अपनी चरम सीमा पर रहती है। प्रकृति पुष्पित-पल्लवित हो उठती है। प्रकृति की सुंदरता शोभायमान होती है। जिस तरह उस समय में प्रकृति में परिवर्तन होता है, उसी तरह हमारे शरीर और मस्तिषक में भी परिवर्तन होता है। प्रकृति के सारे तत्व जैसे पेड-पहाड, पशु-पक्षी आदि समस्त प्राणी उस दौरान प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए, उससे होनेवाले दुष्परिणामों से बचने का प्रयास करते हैं। इसलिए मानव को भी प्रकृति का अनुसरण करना चाहिए। ताकि वे भी सुरक्षित जीवन यापन कर सकें। परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। वेदों में प्रकृति को ईश्वर का साक्षात मानकर उसके हर रूप का वंदना की गई है। इस के आलावा आकाश के तारों और आकाश मंडल की स्तुति कर उन से रोग और शोक को मिटाने की प्रार्थना की गई है। अतः प्रकृति की प्रार्थना से मनुष्य हर तरह की सुख-समृद्धि पा सकता है। इसी दृष्टि से प्राचीन ऋषि-मुनि त्यौहार को ये सारे नियम बता गए हैं। उगादि का यह पर्व हमें प्रकृति के और भी समीप ले जाने का कार्य करता है। क्यों कि उगादि के अवसर पर बनाये जाने वले पच्चडी नामक व्यंजन स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह हमारे शरीर में प्रतिरोधी क्षमता को भी बढ़ाता है।

### उगादि पच्चडि का महत्व :

उगादि पच्चडि का अपना खास महत्व है। इस त्यौहार के दौरान एक विशेष चटनी बनायी जाती है, जो उगादि पच्चडि नाम से प्रसिद्ध है। 'पच्चडि' तेलुगु भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'चटनी' इसकी षडरुचियाँ होती हैं।

(१) इमली - इमली से खट्टापन

(२) गुड - गुड से मिठास

(३) कच्चे आम - कच्चे आम से कसैलापन

(४) नमक - नमक से नमकीन

(५) नीम के फूल - नीम के फूलों से कडवाहट और

(६) हरी मिर्च - हरीमिर्च से तीखापन इस में मिलते हैं। इन्हीं छह स्वादों से चटनी बनायी जाती है और ये छह स्वाद जीवन के तरह-तरह के अनुभवों के प्रतीक हैं। इस से यह संदेश मिलता है कि जीवन सुख-दु:खों का संगम है।

वास्तव में उगादि पच्चडि में आरोग्य सूत्र निहित है। ''ऋतु संधिषु व्याधिर्णायते'' सभी ऋतु संधियाँ बीमारियाँ फैलाती हैं। खासकर वसंत और शरत ऋतुएँ विपरीत रोग फैलाती हैं। इसलिए शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिकत के लिए कई आहार-विहार नियम बनाये गए हैं। वसंत ऋतु के समय में प्रकृति में बहुत परिवर्तन आते हैं। उन परिवर्तनों से बर्दाशत करने की शक्ति शरीर को देने वाले पदार्थों से उगादि पच्चडी बनती है।

'काल' की गणना मुख्य रूप से दो तरीकों से की जाती है- एक चंद्रमान, दूसरा सौरमान, भारतीयों ने दोनों को समान महत्व दिया है। अधिक मासों में दोनों को समन्वय किया है। सौरमान के अनुसार संक्रांति आदि त्यौहार मनाया जाते हैं। नित्य व्यवहार के लिए चंद्रमान का उपयोग करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि रात के समय आकाश में चंद्रकलाओं को देखकर तिथियों को पहचान सकते हैं। नक्षत्रों को देखकर महीनों का पता लगा सकते हैं। सब के लिए यह आसान तरीका है। सूर्य को देखकर इनकी गणना करना असंभव है। क्यों कि सूर्यकांति में नक्षत्र नहीं दिखायी देते। नक्षत्रगमन से काल गणना दोष रहित भी होता है। शकमान बदल सकती है किंतु नक्षत्रगमन स्थिर रहता है। करोडों वर्षों के पहले की घटनाओं के समय के सही गणना आज भी की जा सकती है। 'उ' माने 'नक्षत्र', 'ग' माने, 'गमन' 'उगा' माने 'नक्षत्रगमन' इस प्रकार कुछ लोगों का मानना है कि 'उगादि' माने नक्षत्रगमन की गणना पहला दिन इस से यह स्पष्ट होता है कि पहला वर्ष पहली ऋतु, पहला माह, पहली तिथि की शुक्ल प्रतिपदा के पहले दिन को नववर्ष के आरंभ के अवसर पर उगादि बड़ी श्रद्धा से मनायी जाती है। भास्कराचार्य ने अपने ''सिद्धांत शिरोमणि' नामक ग्रंथ में यह प्रतिपादित किया है कि दिव, माह, वर्ष तीनों का प्रारंभ एक ही बार उगादि के दिन संभव हो पाया है। काल साक्षात् आदित्य भगवान का स्वरूप माना जाता है। अत: कालस्वरूप जानने वाले  दीर्घायुष्मान एवं काल के विजेता बनता हैं।

### पंचांग श्रवण का महत्व :

पंचांग श्रवण उगादि त्यौहार का प्रमुख घटक तत्व है। यह शुभ परिणामों का सूचक माना जाता है। गंगा स्नान करने से जो फल मिलता है, वही फल पंचांग श्रवण से मिलता है। गोदान का फल प्राप्त होता है। संतान की प्राप्ति होती है। आयु बढ़ती है। शत्रुओं का नाश होता है। कठिन से कठिन कार्य भी सरल बन जाते हैं। अत: पंचांग श्रवण करना सब लिए बहुत ही आवश्यक है।

शास्त्रों में सूर्य, चंद्र, पृथ्वी और नक्षत्र आदि सभी की स्थिति, गति और दूरी के मान से पृथ्वी पर होनेवाले दिन-रात और संधिकाल को विभाजित कर संपूर्ण पंचांग बनाया गया है। पंचांग एक प्रणाली है जिस में काल, दिन, नक्षत्र आदि का नामांकित किया जाता है। खगोल शास्त्र की दृष्टि से भी पंचांग महत्वपूर्ण माना गया है। पंचांग पठन और श्रवण से भी लाभ मिलता है।

### पंचांग के पाँच प्रमुख अंग होते हैं -

(१) तिथि, (२) वार, (३) नक्षत्र, (४) योग और (५) करण

तिथेश्चश्रिय माप्नोति, वारादायुष्य, वर्धनं,
नक्षत्रात हरते पापं, योगाद्रोग निवारणं
करणात्कार्य सिद्धिस्य पंचांग फल उत्तमं।

(१) **तिथि** : हर तिथि का अपना महत्व होता है। तिथि ३० होती है।

(२) **वार** : वार के पाठन और श्रवण से आयु की वृद्धि होती है। वार सात (७) होते हैं।

(३) **नक्षत्र** : नक्षत्र के पाठन और श्रवण से पापों का नाश होता है। नक्षत्र २७ होते हैं।

**(४) योग :** योग के पाठन और श्रवण से रोग दूर होते हैं। मनुष्य स्वस्थ बना रहता है। इसीलिए आज स्कूलों और कलाशालाओं में योग शिक्षा दी जा रही है। ताकि छात्र-छात्राओं का स्वास्थ्य बना रहे और शिक्षा पर ध्यान दे सकें। योग भी २७ होते हैं।

**(५) करण :** करण के पाठन और श्रवण से समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। करण ११ (ग्यारह) होते हैं।

प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग पंचांग पाठन करते थे। पंचांग श्रवण का पहला तत्व है- फलश्रुति। अर्थात् सुनने से मिलने वाला फल। दूसरा है वार्षिक फल का पाठन। तीसरा है नवनायकों के बारे में बताना। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष में, प्रत्येक ग्रह की स्थिति जानने से पूरे वर्ष का फल जान सकते हैं।

वस्तुतः पंचांग पाठन और श्रवण अत्यंत शुभ माना जाता है। मान्यता है कि भगवान श्री रामचंद्र भी विधिवत पंचांग का श्रवण करते थे। प्राचीन काल से पंचांग श्रवण का महत्व बताया जा रहा है। क्यों कि इसी के आधार पर भविष्य में होने वाले शुभ-अशुभ का पता चलता था। इस से लोग सतर्क रहकर सुखमय जीवन यापन करने की ओर अग्रसर होते थे।

एक त्यौहार मनाने में बहुत सारी विशेषताएँ निहित रहती हैं। भारत देश में मुनि-महर्षियों ने अपने तपोबल एवं दिव्यदृष्टि से जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसके आधार पर मानव जाति के हित के लिए कई आचार-व्यवहार के नियम बनाये है। इन पारंपरिक नियमों में खगोल विज्ञान, स्वास्थ्य, पारिवारिक एवं सामाजिक विकास, चारित्रिक विकास, नैतिक मूल्यों निर्वहण तथा आध्यात्मिक जीवन के प्रति आस्था आदि कई महत्वपूर्ण प्रयोजन समेत हुए हैं। इनका आचारण करने पर लाभ मिलता है। जानबूझ कर करने पर सानंद की प्राप्ति होती है। सारे त्यौहार सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना जागृत कर लोगों में समरसता के मार्ग प्रशस्त करते हैं। अंग्रेजी 'न्यू इयर' हमारा नव वर्ष नहीं है। चैत्र प्रतिपदा ही हमारा नववर्ष है। इसका सीधा संबध भारतीय संस्कृति से है।

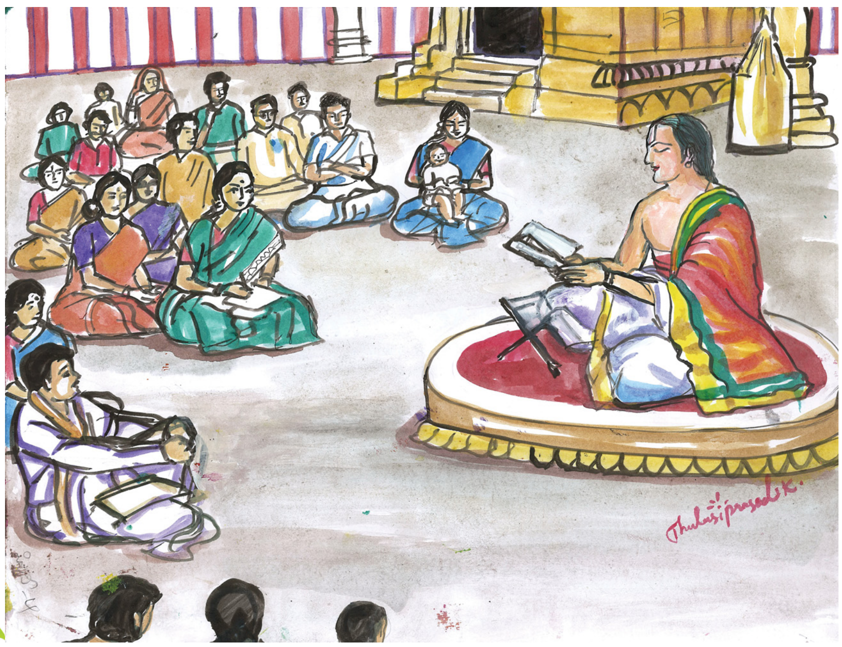

उगादि के अवसर पर लोग पुराने वर्ष को बिदाई देते हैं और नये वर्ष का स्वागत करते हैं। नववर्ष की शुभकामनाएँ दी जाती है कि सबका जीवन मंगलमय होगा वास्तव में अपने में सबको और सब में अपने को देखकर व्यक्ति जब कोई त्यौहार मनाता है, तभी उसे पूर्ण सुख और संपूर्ण आनंद की प्राप्ति होती है। क्यों कि तब वह सब के हित में ही अपना हित देखने लगता है तथा स्वार्थ और संकीर्णाताओं को भूलकर परहित, परोपकार की ओर अग्रसर होता है। इस यथार्थ सत्य को जानते हुए आज के युवा.... को आगे बडना चाहिए। उनका कर्तव्य बनता है कि इस उगादि पर्व को सादगी व पवित्रता से मनाएँ। अर्थात उगादि त्यौहार को निष्ठापूर्ण मनाते हुए भारतीय गरिमामय संस्कृति का परिरक्षण करें।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

# शरणागति मीमांसा

## (षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

### १०६

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओ! यह सब इस नटिनी माया का ही कर्त्तव्य है। सब अपने को चतुर मानते हैं परन्तु किस तरह सब को बेवकुफ बना रखा है। अब इस से बढ़कर और बेवकूफी क्या हो सकेगी कि जो श्वांस के मालिक परमात्मा हैं उन के लिए तो साधारण उत्सव किया जाय और दस दिन में जो मुर्दा कहने वाला उसके लिए धूम धड़ाके के साथ विशेष किया जाय।

इसी के ऊपर तो बड़े का बचन है कि:-

**सवैया :-**

*झूठो है झूठो है झूठो सदा जग सन्त कहन्त जो अन्त लहा है।*

*ताको सहै शठ संकट कोटिक काढत दन्त करन्त हहा है।।*

*जान पने को गुमान बड़ो तुलसी के बिचारे गँवार महा है।*

*जानकि जीवन जान ना जानत जान कहावत जान कहाँ है।।*

इस सवैया का वही भाव है जो पहले कह चुके हैं। दुनियाँ अपने को चतुर ज्ञानी और समझदार मानती है और माया खूब ताली बजा बजा कर हँसती है और कहती है कि ये दुनियाँ वालों! तुम महा बेवकूफ और पागल हो। जब नाशवन्त चीजों के लिए ही तुम सदा मरे जा रहे हो और सच्चे बन्धु प्यारे परमात्मा की तरफ तुम्हारा झूकाव ही नहीं है तो काहे के ज्ञानी और चतुर हो। यही तो हमारा अद्भूत कर्त्तव्य है। सच्चा को झूठा और झूठा को सच्चा मानकर संसार के आवागमन चक्र में खूब भटका करो।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि इस तरह उल्टे ज्ञान में डालकर सब जीवों को खूब संसार में भरमाती है। कौन नहीं जानता है कि स्त्री पुरुषों के शरीर में मल मूत्र भरा हुआ है। शरीर से वायु निकले पर चौतरफा दुर्गन्ध छा जाता है। शास्त्र भी कहता है कि:-

*किं विद्यया किं तपसा किं त्यागेन बलीयसा।*

*किं बिविक्त ने मौनेन स्त्री भिर्यस्य मंनोहृतम्।।*

इसका भाव यह है कि मल मूत्र का बिकार भरा हुआ देखने मात्र को रमणीय वास्तविक दुर्गधों का भण्डार जो स्त्रियों का शरीर है, अपने अज्ञान वश जो उसके ऊपर मोह कर रहते हैं उन लोगों की विद्या, तथा तप, वैराग्य, मौन धारण, एकान्त का निवास ये सब फिजूल है।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओ! मैं केवल शरणागति विषय का विवेचन करने वाला हूँ। माया का प्रसंग जो कुछ कहा केवल माया के प्राबल्य का नमूना बताने वास्ते। इस से छूटकर परमपद गये बिना चेतन को स्वप्न में भी आराम नहीं है। श्री भगवान को शरणागति को छोड़कर माया से छूटने के लिए जितने उपाय शास्त्रों में वर्णित हैं सब कमजोर हैं। यह ऐसी प्रबल है कि सब साधनों को दबा देती है। किसी से कभी डरती नहीं है। सो पहले कह चुके हैं कि:-

"शिव विरंचि जेहि देखि डराहीं। अपर जीव केहि लेखे मांहीं।।

याने ब्रह्मा शंकरादिक जिस को देख कर डर जाते हैं तो दूसरा कौन है जो इसको जीत सकता है। यह माया सिर्फ

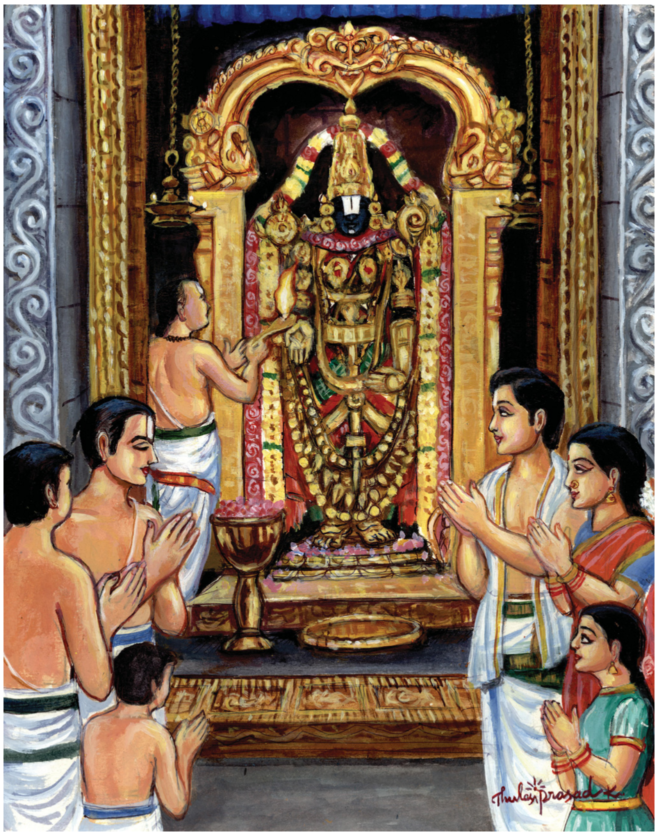

एक परमात्मा से ही डरती है। पूर्वाचार्यों का श्रीमुख बचन है कि:-

*"माया जन्मोहिनी"*

श्री हरि से तो यह बहुत डरती है। उनके सामने खड़े होने में लज्ञा करती है। श्री शुकदेव मुनि कहते हैं कि:-

*"बिलज्ञमानया यस्य स्थातुमीक्षा पथेऽनया।*
*विमोहिता विकत्थन्तेममाहमिति दुर्धियः।।"*

इस श्लोक का वही भाव है जो पहले कह चुके हैं। जो परमात्मा का सहारा लेगा वह अवश्य माया से पार होगा। श्री भगवान का श्री गीता में श्री मुख बचन है कि:-

*"दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।*
*मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।"*

"हे अर्जुन! यह माया नाम वाली एक अति विचित्र शक्ति है, त्रिगुणमयी है, अति दुरत्यय है जो मेरी शरणागति करते हैं याने इतरावलम्ब को त्याग कर जो मेरी कृपा का सहारा लेते हैं वे अवश्य इस को तरजाते हैं।"

शास्त्रों में अनेक प्रकार के माया तरने के लिये उपाय कहे गये हैं। परन्तु परवश जीव के लिये उस कठिन उपायों के द्वारा इस दुरत्यय माया से पार होना महा अशक्य है। अतः इससे तरने की इच्छा करने वाले अधिकारियों को चाहिए कि हमारे शरण होकर रहें।

यह भगवान का श्री मुख वचन है, सब शास्त्रों का सार है। इस में माया से पार होने के लिये सब के लायक कैसा सुन्दर अचूक उपाय खुद भगवान के ही श्रीमुख द्वारा बताया गया है।

*"मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।"*

इस पद में स्पष्ट आज्ञा कर रहे हैं कि कोई वर्ण तथा आश्रम वाला माया से तरना चाहता हो तो हमारी शरणागति के द्वारा सुगमता से पार हो सकता है। देखिए माया बन्धन से छूटकर परमपद जाने के लिए सब के लायक श्री भगवान की शरणागति कैसा सुन्दर सरल उपाय है। जिस के अधिकार में माया रहती है, जिस से सदा भय खाती है उसका यह आदेश है कि-

*"मम माया दुरत्यया"*

अर्जुन! मेरी माया अति दुरत्यय है। "शिव विरंचि कँह मोहई" ब्रह्माशंकरादिक को भी अपने झपेटे में लेकर बैठी हुई है। "को है बपुरा आन" फिर दूसरा कौन है जो इस से बच सकता, हमारी शरणागति के अतिरिक्त माया से तरने के लिये और कुछ भी उपाय नहीं है। कृपा सागर भगवान इस श्लोक में तीनों बातों को स्पष्ट बता दिये हैं। एक तो यह कि हमारी शरणागति के बिना दूसरे किसी उपाय से माया के तरना चाहे तो नहीं तर सकता, दूसरी बात यह कि जो मेरी शरणागति कर लेगा वह अवश्य ही इससे पार हो जायेगा। तीसरी यह कि चाहे सो माया से तरने के लिये हमारी शरणागति कर सकता है।

क्रमशः

गतांक से

# श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

**को**कुल मन्नरै मूवेळुकाल्, ओरुकूर् मळुवाल्
पोक्किय देवनै प्पोन्तुम पुनितन्, भुवन मेंगुम्
आक्किय कीर्ति यिरामानुजनै यडैन्द पिन् एन्
वाक्कुरैयादु, एन्मनम् निनैयादिनि मत्तोन्नैये ॥५६॥

दुष्टक्षत्रियकुलोत्पन्नान् भूमिपालानेकविंशतिकृत्वः कठोरतरकुठारेण विलूनवन्तं परशुरामं भगवन्तं स्तुबतो निखिलभुबनव्यापियशसो भगवतो रामानुजस्य पादाब्जप्रपदनादनन्तरं तत्प्रभावान्नान्यत्किमपि वक्ति जिह्वा मम; मनश्च में नान्यत्किमपि विचिन्तयति। (परशुरामावतारस्तावदहंकारयुक्त-जीवाधिष्ठानाद्धेतोर्मुमुक्षूणामनुपास्य इति स्थितम्; गाथायामस्यां भगवान् रामानुजः परशुरामं स्तौतीति कथनं न दुष्यति; विरोधिनिरसनरूप- महोपकारप्रत्युपकाररूपा सेयं स्तुतिरिति बोध्यम्। तदुपासनं तु निषिद्धमेव, न तदत्राभिहितम्।।)

श्रत्रियकुलोत्पन्न दुष्टराजाओं का तीक्ष्णकुठार से इक्कीस बार विनाश करनेवाले परशुराम भगवान की स्तुति करनेवाले, परमपवित्र एवं भूतलव्यापि यशवाले श्री रामानुजस्वामीजी का आश्रय लेनेपर, अब से मेरी बाणी दूसरे किसीका नाम नहीं लेगी; मेरा मन चिंतन नहीं करेगा। (विवरण-आचार्यो का सिद्धांत है कि परशुराम हमें उपासना करने योग्य नहीं; क्यों कि वह तो दुष्टक्षत्रिय निरासरूप विशेष कार्य सिद्धि के लिए अहंकारयुत किसी जीव में भगवान की शक्ति का आवेशमात्र है। अतएव उसे आवेशावतार कहते हैं; नतु श्रीरामकृष्णादिवत् पूर्णावतार। प्रकृतगाथा में इतना ही कहा गया है कि श्री रामानुजस्वामीजी उनकी स्तुति करते हैं, नतु उपासना। बिरोधिनिरासरूप महोपकार का स्मरण करते हुए उनकी स्तुति करने में कोई आपत्ति नहीं हैं; क्यों कि यह उपासना नहीं हो सकती।)

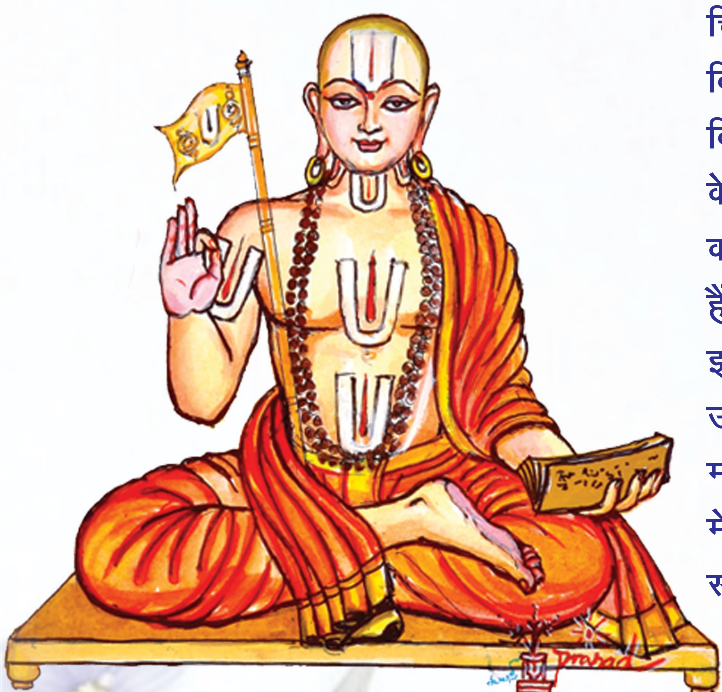

क्रमशः

# तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर
## (तिरुपति बालाजी)


अंग्रजी मूल - श्री साधु सुब्रह्मण्य शास्त्री
हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा


## अध्याय - 9

### आमुख

'**ति**रुपति' भारत के अत्यधिक प्रसिद्ध तीर्थ - स्थानों में प्रथम गण्य है। यह पवित्र क्षेत्र 13°41" उत्तर अक्षांस (नार्थ लॉटिट्यूड) और 79°24" पूर्व रेखांश (ईस्ट लांगिट्यूड) पर आजकल के आन्ध्रप्रदेश के चित्तूर जिले की दक्षिणी छोर पर है। इस शहर के पास ही स्थित शैल शिखर पर भगवान श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के अवतरित होने के कारण ही इस शहर का नाम 'तिरुपति' है। तिरुमल शैल शिखरमाला, 'शेषाचल' नाम से ख्यात है। यह पहाडी प्राँत कडपा जिले में शेषाचल कहलाता है, तो कर्नूल जिले के उत्तरी प्राँत में 'नल्लमल' (काला पहाड)। चित्तूर, कडपा और कर्नूल जिलों में व्याप्त तीनों पहाडी श्रृंखलाओं की जोड पूर्वी घाटियों का आधा उत्तरी भाग है। इन पहाडी घाटियों का ऊपरी भाग अनेक पंक्तियों में बहु वलयों में और पर्वत श्रेणियों के रूप में तीन जिलों में परिव्याप्त हैं। इन को देखने से ऐसा लगता है कि एक महानाग कुंडली डालकर बहुत ही प्रशस्त और प्रशांत हो आराम कर रहा है। पुराणों के अनुसार ये आदिशेष ही हैं जो समस्त विश्व को अपने सहस्र फणों पर संभालते रहते हैं। पौराणिक परंपरा में मान्यता है कि ये श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी को अपने सात फणों पर लेकर उनकी सेवा में रत हैं। साथ - साथ अहोबल नरसिंह को अपनी कुंडलीकृत शय्या पर तथा पवित्र कृष्णा नदी के दक्षिणी तट पर विराजमान श्रीशैल पर्वत रूपी अपनी पूँछ पर श्री मल्लिकार्जुन स्वामी को वहन किये हुए हैं। अहोबल क्षेत्र और श्रीशैल क्षेत्र दोनों कर्नूल जिले में हैं। नल्लमल पहाडी श्रृंखलाओं में हैं। ये तिरुपति से क्रमशः 120 और 180 मील की दूरी पर स्थित हैं। श्रीकालहस्तीश्वर, तिरुपति के पास ही केवल 25 मील की दूरी पर विलसित है। श्रीकालहस्ति क्षेत्र, शेष के फण के मुखस्थान पर स्थित है।

तिरुपति का पहाडी तल बंगाल की खाडी तल से 2820 फुट की ऊँचाई पर है और उसका विस्तार क्षेत्र लगभग 100 वर्गमील में है। यह पहाडी विस्तार सात श्रृंखलाओं से युक्त है जो सर्पराज आदिशेष के सप्त फणों के रूप में मान्य है। इन में पहले के चार लगभग सपाट और लगातार हैं जब कि पाँचवाँ और छटवाँ गहरी

और सघन गिरि - कंदराओं से युक्त है। इसे *'अवसारि'* या 'अव्वाचारीं' कोना' कहते हैं। कोना का अर्थ ''व्यॉली'' (घाटी) है। इन सप्त गिरियों को *शेषाचल, वेदाचल, गरुडाचल, अंजनाचल, वृषभाचल, नारायणाचल और वेङ्कटाचल* नामों से अभिहित किया गया है। इन में श्रीवेङ्कटेश्वर सातवीं गिरि श्रृंखला पर श्रीस्वामी पुष्करिणी के दक्षिणी तट पर स्थित अपने मंदिर विमान में विलसित हैं। यह नारायण गिरि की ऊँची गिरि से लगभग दो मील के अंतराल में है। नारायण गिरि शिखर समुद्री तल से लगभग 3600 फुट की ऊँचाई पर है।

ऐसे महान वेङ्कटाचल पर विलसित होने के कारण ही भगवान को वेङ्कटेश्वर नाम मिला है। श्रीवेङ्कटेश्वर सप्तगिरि के अधिदेवता हैं। ऐसे कोई अन्य नाम इतना विशेष ख्यात नहीं है, यद्यपि ये सहस्र नामों से अर्चित हैं। तिरुपति (श्रीपतिपुर) नाम, जिसका अर्थ 'लक्ष्मीपति' है, वैसे तो वेङ्कटाचल को मिलना चाहिए था, जहाँ पर श्रीवेङ्कटेश्वर मंदिर में विलसित हैं। लेकिन यह नाम पहाडी तल में (नीचे) स्थित नगर को मिला है। तिरुपति नगर 'मुन्सिपल टाउन' है (हाल ही में कार्पोरेषन बना है)। पहाड के ऊपर, गिरि शिखर पर मंदिर के आसपास का गाँव 'तिरुमल' (पवित्र गिरि) कहलाता है। 'तिरुमल' को 'ऊपरी तिरुपति' (= एगुव तिरुपति) तथा तिरुपति नाम से प्रसिद्ध नगर को 'दिगुव तिरुपति' (= निचला तिरुपति) भी कहा जाता है।

ऊपरी तिरुपति अथवा तिरुमल पर श्रीवेङ्कटेश्वर का पवित्र मंदिर है तो श्री गोविन्दराज स्वामी एवं श्रीकोदंडराम स्वामी के मंदिर 'निचला तिरुपति' में है। श्रीकपिलेश्वर स्वामी का मंदिर पहाड के चरण तल में स्थित है। पास ही के तिरुचानूर में श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी की पट्टरानी श्रीपद्मावती देवी का मंदिर

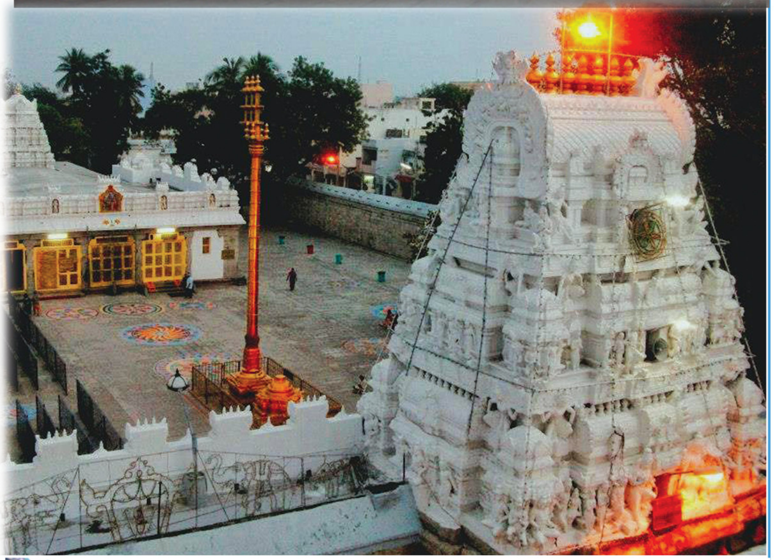

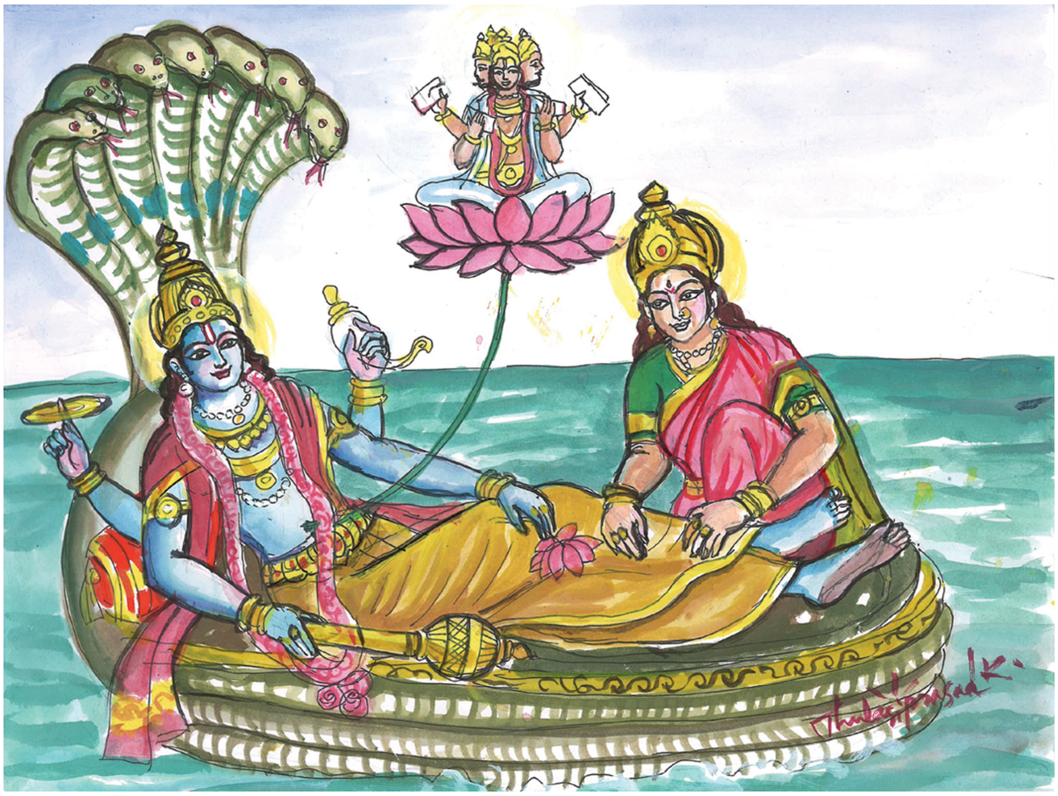

विराजमान है। इनको श्रीमहालक्ष्मी और श्रीअलरमेलमंगा (अलमेलुमंगा) भी कहते हैं। इसी मंदिर के पास ही श्रीकृष्ण और श्रीबलराम के मंदिर भी देखने को मिलते हैं। श्रीसुंदरराज स्वामी का भी मंदिर यहाँ स्थित है।

श्रीपराशरेश्वर स्वामी तिरुचानूर के पास के योगिमल्लारम गाँव में हैं। योगिमल्लारम, प्राचीन समय में तिरुचानूर का ही भाग था। तिरुचानूर 'तिरुच्योगिनूर' का विकसित रूप है। 'तिरुच्चोगिनूर' माने 'श्री योगी का गाँव' है। इस में 'योगी' शब्द पराशर योगी के साथ जुडता है जिन के कारण 'योगि मल्लारम' नाम पडा है। यहाँ के पराशरेश्वर (मंदिर की स्थापना इनके द्वारा होने के कारण उनके नाम पर पराशरेश्वर है) आराध्य देव के रूप में स्थापित हैं। कालांतर में 'तिरुच्चोगिनूर' 'तिरुच्चुकनूर' बना। शुकपुर, शुकपुरी और शुकग्राम आदि नामों के पीछे श्रीशुक योगी का संबन्ध भी जुड जाता है। श्रीशुक योगी या श्रीशुक महर्षि के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने यहाँ विलसित श्रीकृष्ण की आराधना की थी।

आळ्वारों और आचार्यों ने तिरुपति पहाड को वेङ्कटाचल, वेङ्कटगिरि और वेंगडम (वेङ्कटम्) नामों से अभिहित किया है। यहाँ पर दिव्य आनंद निलय विमान में श्रीवेङ्कटेश भगवान विराजमान हैं। इस क्षेत्र की विशिष्ट धार्मिक और पौराणिक प्रसिद्धि मिली है। दक्षिण भारत के तीर्थ क्षेत्रों में विशिष्ट स्थान तिरुमल को प्राप्त है। भगवान श्रीवेङ्कटेश्वर का लीला पर्वत मानते हुए भक्त इस पहाड को 'कीडाद्रि' भी कहते हैं। यह श्रीमहाविष्णु का श्रीवैकुण्ठ ही मानते हैं। वैसे तो वैकुण्ठ विष्णु भगवान का वास स्थल ही है। यहीं श्रीमहालक्ष्मी समेत वे रहते हैं। गरुड ने भगवान के आदेश से ही इस वैकुण्ठ को भूमि पर लाकर रखा है। मान्यता है कि श्रीश्वेतवराह स्वामी ने इस प्रकार की आज्ञा दी थी। श्वेत वराह स्वामी भी विष्णु के अवतार ही थे।

क्रमशः

(गतांक से)

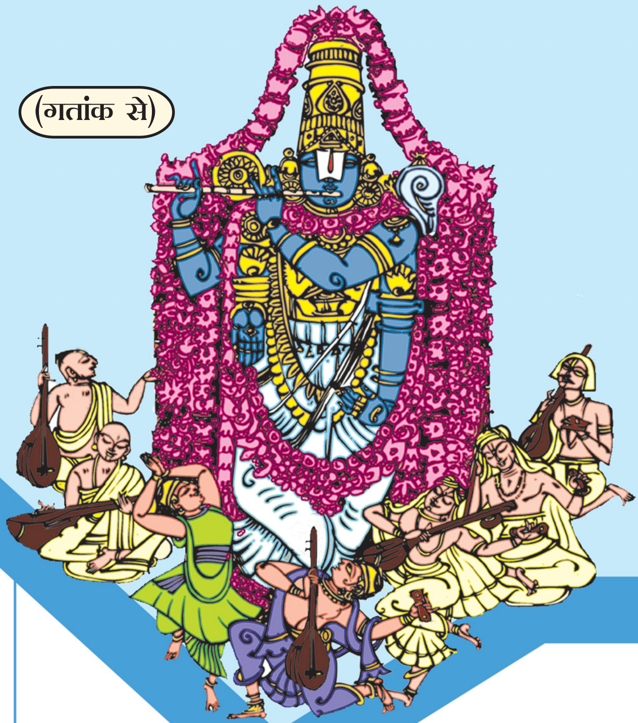

# हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

*तेलुगु मूल - श्री एस नागराजाचार्युलु*

*हिन्दी अनुवाद - डॉ एम आर राजेश्वरी*
*मोबाइल - ९४९०९२४६७८*

देवताओं के प्रिय देव श्रीवेंकटेश्वर स्वामी, भक्तों से धन या भेंट जैसे उपहारों को प्राप्त कर (भक्तों से द्रव्ययज्ञ कराकर), उल्टे उन्हीं को अखण्ड़ऐश्वर प्रदान कर रहे हैं।

*आरुढ़ गरुड़स्कंदमालिंगति रमाघरम्।*

*आवमज्ञन सर्वस्व मोश्रये वेंकटेश्वरम्।।*

गरुड़ के पीठ पर श्रीवेंकटेश्वरस्वामी रमासहित विराजमान होकर दर्शन प्रदान करते हैं। आश्रितजन का सर्वमान्य देवता, तथा पालक के शरण में मैं भी आड़ लेना चाहता हूँ।

*काशिपोकृत्ययंशेतेगिरि कृत्याधिष्ठति।*

*आवर्ताण्र्योम जीकृत्य सतत्भक्ताग्रणीः फणी।।*

शेषशायी रहनेवाले वैकुंठवासी अब श्रीनिवास बनकर शेष पर्वत पर विराजमान हैं। रामावतार में भगवान ने लक्ष्मण रुपी शेष की सेवा स्वीकार किया। कृष्णवतार में शेष भगवान बलराम रुप धारण कर भगवान के लिए प्रीतिकर फण बने। श्रीनिवास के भक्ताग्रेशर वृंद में शेष नाग ने अपने लिए स्थान बनाया।

*शंकर रवि शशि मुख्याः किंकर पदवी मुपाश्रिता यस्या।*

*वेंकटगिरि नाथोऽसौ पंकजनयन परात्परो जयति।।*

शंकर भगवान, सूर्य तथा चंद्र, श्रीनिवास के सेवक (भृत्यु) बनकर विद्यमान हैं। ऐसा पुंडरीकाक्ष सभी चीजों से परे हैं।

*श्रीवेंकटगिरिद्रोणी क्षीणीयस्थानणीयसी*

*तंवरण्यं सुराग्रण्यं वेदगम्यं भजामहे।।*

वेंकटाद्रि के शिखराग्र पर विराजमान सर्वश्रेष्ठ, समस्त देवता के नायक, वेदवेद्य श्रीवेंकटेश्वर स्वामी का मैं सेवक हूँ।

*श्रीवेंकटपते दीनगते रम्याकृतेक्षितौ।*

*नमः समस्त मर्त्यार्ति प्रमर्दन किमस्ति ते।।*

आर्तियों के देवता, हे मनोहर! समस्त जीवराशि के संकट के नाशक श्री वेंकटपते! आपका समवर्ती देवता दूसरा नहीं है स्वामी।

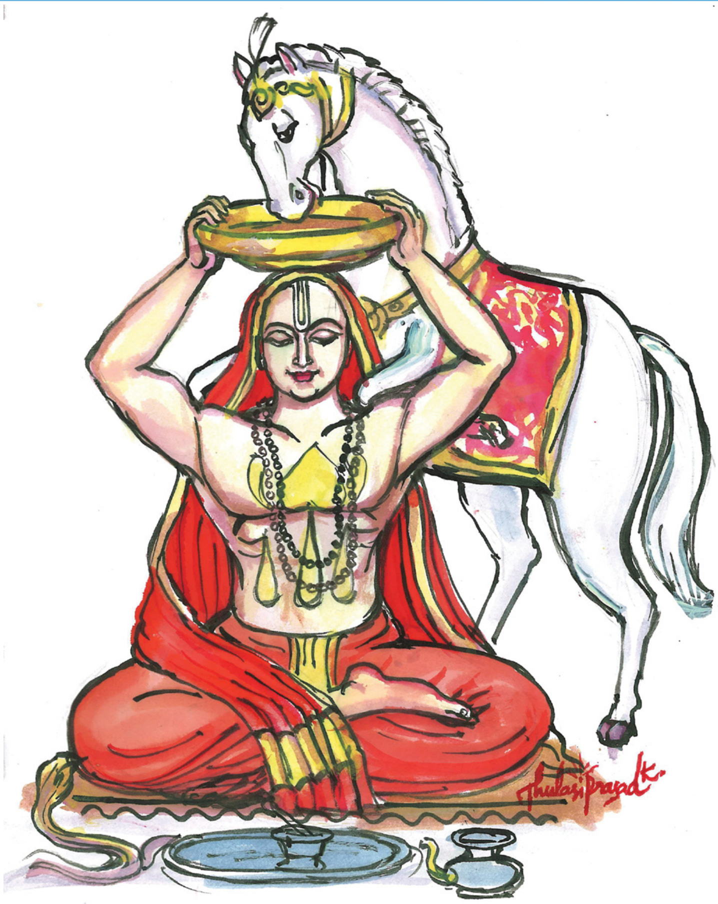

*समस्त सुजनाधारं दोषदूरं गुणाकरम्*

*श्रीवेंकटाचलवासं श्रीनिवासं भजेऽनिशम्।।*

हे भगवान, आप समस्त सज्ञनों के आधारभूतात्मा हो! दोषमुक्तात्मा हो, गुणों के सार हो। हे वेंकटगिरि निलयवासी श्रीनिवास! मैं आपका निरंतर भजन, कीर्तन करता हूँ।

*आनंद तीर्थवरदे दानवारण्य पावके।*

*ज्ञानदायिनी सर्वेशे श्रीनिवासेस्तु मेमनः।।*

आनंदतीर्थ स्वामी के वरप्रदाता, दानवारण्य के अग्नि, ज्ञानियों के ज्ञानप्रदाता, समस्त भक्तों के स्वामी श्री श्रीनिवास मेरे अंदर वास बनायें।

उपर्युक्त रीति से श्रीवादिराज स्वामी ने तीर्थ प्रबंध में श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की जिस भांति स्तुति की, उसी भांति, उन्होंने कन्नड़ भाषा में रागत्ताल युक्त असंख्यक पदों की रचना गाने के उपयुक्त बनाये। उनमें से 'नारायणनेने मनवे', 'ईतने लोकगुरुवेद विख्यात', 'आंजनेयने अमरवंदित', 'मुद्दुमुखदातनम्म', 'ओंदुबारी स्मरणे सालदे', नेनेवे ननुदिन नीलनीरद वर्णन गुणरन्नन', 'ईगलो इन्यावगलो', आदि सुविख्यात पद हैं। श्रीवादिराज स्वामी ने संस्कृत भाषा में दसावतार स्तुति की रचना बडी गंभीरतापूर्वक पदबंधयुक्त तथा लयात्मक रुप से की है। श्रीवादिराजस्वामी ने अपने एक कन्नड़ कीर्तन 'पावनमाडुवेनुना। मनदणिय नामामृतव' में श्रीनिवास की स्तुति करते हुए ऐसा कहा- तेरा नाम शब्द से भी मीठा है, चीनी (शक्कर) से भी मधुर है, केले, खजूर तथा अंगूर से भी मीठा है, मलाई युक्त दूध से भी स्वादिष्ट है स्वामी। पदकवि यह भी खुलेआम वादा करते हैं कि जो भी इस भगवान का नाम लेता है, वह निश्चित रुप से भगवान से सायुज्य प्राप्त कर सकता है।

इस कवि का एक और पदरत्न सुप्रसिद्ध है - 'सारिदेनो निन्न वेंकटरत्न''। इस पद में कवि यह प्रकट करते हैं कि हे स्वामी मैं अनाथ हूँ, तुम ही मेरे सहारा हो, साथी हो। मैं तुम्हारा हूँ, ऐसा मानकर मुझ पर नजर रखो, आप स्वयं मुझ पर दया प्रमारित करो। कवि अपने शब्दों में इस प्रकार प्रार्थना करते हुए कहते हैं- हे देवदेव! मेरे अपराधों की गिनती मत करो! जिस भांति समस्त भक्तों पर तुम अपना अनुग्रह प्रसारित करते हो, उसी भांति शेषाचल के घन हयवदन स्वामी! वेंकटेश, मेरा उद्धार करो, मुझे तारो स्वामी! **क्रमशः**

# मंगलाशासन पासुरम

# पोय्गैयाल्वार रचित मंगलाशासन पासुरम


*तमिल मूल - श्री टी.के.वि.एन. सुदर्शनाचार्या*

*हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन*
*मोबाइल - ९४४३३२२२०२*


## मनोदीप उज्ज्वलित करता पर्वत

*एळुवार विडैकोल्वार ईनतुळायानै*
*वळुवावगै निनेन्दु वैगल - तोळुवार*
*विनै सुडरै नन्दुविक्कुम् वेंगडमें वानोर*
*मन सुडरै तूण्डुम् मलै (२१०७)*

**शब्दार्थ -**

एळुवार - मिलते ही निकलने वाले,
विडैकाल्वार - विदाई ले जाने वाले,
ईनतुळायानै - तुलसी माला पहने,
वैगल - तोळुवार - सदा नमन करने वाले,
विनै सुडरै - दूर प्रतिक्रिया रूपी अग्नि
नन्दुविक्कुम- बुझाने वाला.

अपनी माँग की पूर्ति होते ही निकल जाने वाले, अपनी पसंद की मुक्ति मिलते ही भगवान विष्णु से विदा लेकर जाने वाले, तुलसी माला पहने भगवान विष्णु को निष्काम्य भाव से और निस्वार्थ भाव से नमन करने वाले इन तीनों की दुर प्रतिक्रिया रूपी अग्नि को बुझाने वाला भगवान का पवित्र पर्वत तिरुवेंगटम देवदूतों के मन में टिमटिमाते दीप को उज्ज्वलित करने वाला है।

## मन पसंद पर्वत

*वगैअरु नुणकेल्वि वाय्वार्गल नालुम्*
*पुगै विलक्कुम् पूम्पुनलुम एन्दी दिसै दिसैयिन*
*वेदियर्गल सेन्ङु इरैंजुम वेंगडमे वेण्संगम*
*ऊदिय वाय्माल उगन्द ऊर (२११८)*

**शब्दार्थ -**

नालुम् - हर दिन,
पुगै - धूप,
विलक्कुम् - दीप,
पूम्पुनलुम - पुष्प और जल
वेदियर्गल - वेद विद्वान
इरैंजुम - प्रार्थन् करने वाला,
वेण्संगम - सफेद शंख,
उगन्द - पसंद

सरल, उत्तम और सूक्षम श्रुतज्ञान रखने वाले वेद विद्वान सब हर दिन दूप-दीप-फूल और जल लेकर विभिन्न दिशाओं से तिरुमलै पर आकर एक साथ नमन करते हैं। वह तो सफेद शंख पर अपना मुँह रखकर बाँग किये भगवान विष्णु बडी इच्छा से आकर रहने वाला मन पसंद पवित्र पर्वत है।

क्रमशः

## तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

**स्वामिपुष्करिणी :** मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

**आकाश गंगा :** मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**पापविनाशनम् :** मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**वैकुंठ तीर्थ :** मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**तुम्बुरु तीर्थ :** मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) :** यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**ति.ति.दे. बगीचे :** देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

**आस्थान मंडप (सदस हाल) :** यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

**श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) :** इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

**ध्यान केंद्र :** तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

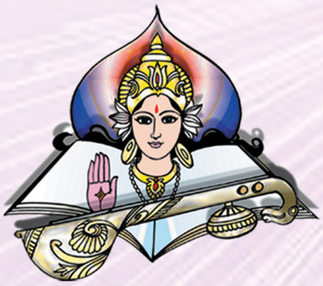

# आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

मोबाइल - ९९४९८७२१४९

## षष्ठः पाठः = छठवाँ पाठ

यः = यदि कोई हो
अन्यः = अन्य
स्वः = स्वयं
प्रभृति = शुरु
श्वः = कल
ह्यः = कल
सन्तु = रहने दो
स्त = रहोगे
असाम = हमें सब रहने दो

**प्रश्न :** १. वयम् अद्यप्रभृति तत्र स्मः।
२. यूयं श्वः प्रभृति अत्र स्त।
३. ह्यः अहं तत्रासम्।
४. अन्यः तत्र नासीत्।
५. यः तत्रासीत् सः अहम्।
६. त्वं कः?
७.अहम् एकः।
८. कदा त्वं तत्रासीः?
९. ते ह्यस्तत्रासन्।
१०. तत्र ह्यः के आसन्,
अद्य प्रातः प्रभृति के सन्ति?

**प्रश्न :** १. क्या तुम कल वहाँ थे?
२. मैं वहाँ नहीं हूँ।
३. हमें वहाँ रहने दो।
४. वे यहाँ रहने दो।
५. तुम आज सुरु से कहाँ थे?
६. हम सब यहाँ थे।
७. तुम वहाँ थे?
८. वे कहाँ हैं।
९. वे सब यहाँ से हैं।
१०. अब वहाँ एक है।

**जवाब :** १. हम आज से वहाँ है।
२. तुम कल से यहाँ रहो।
३. कल मैं वहाँ था।
४. अन्य वहाँ नहीं था।
५. जो कोई वहाँ था वह मैं हूँ।
६. तुम कौन हो।
७. मैं एक हूँ।
८. तुम कब वहाँ थे।
९. वे कल वहाँ थे।
१०. कल वहाँ कौन था?
आज सुबह से कौन हैं?

**जवाब :** १. ह्यः त्वं तत्र नासीः किम्?
२. अहम् तत्र नासम्।
३. वयं तत्र असाम।
४. ते अत्र सन्तु।
५. यूयम् अद्य प्रभृति कुत्र आस्त?
६. वयं अत्र आस्म।
७. यूयं तत्र आस्त।
८. एते कुत्रासन्!
९. ते सर्वे अत्रासन्।
१०. इदानीं तत्र एकः अस्ति।

# मानव सेवा ही माधव सेवा

- श्रीमती सी.मंजुला
मोबाइल - ९९६६१३८४४

किरण ने रवि से कहा कि - "यह भौतिक विज्ञान मुझे समझ में नहीं आ रहा है, समझने की तरह बोलो न।" इसका उत्तर देते हुए रवि ने कहा कि- "मुझे भी समझ में नहीं आ रहा है, हमारे भौतिक विज्ञान अध्यापक से पूछने के लिए सोचा तो, अध्यापकजी अपनी बेटी की वजह से दस दिनों से विद्यालय नहीं आ रहे हैं।" किरण बोला कि- "लेकिन संजय हमारी कक्षा में पहला रैंक है न उन से पूछेंगे क्या?" रवि ने किरण से कहा कि- "बाप रे! उनके पास जाकर पूछता है क्या! यह बताना मुश्किल है कि पहली रैंक हम दोनों में से किस को मिलेगा। उसे अपनी पढ़ाई में आगे रहने का घमंड है। यह एकमात्र समय था, जब मैं भौतिक विज्ञान में पीछे रह गया था, नहीं तो उनके ऊपर हमेशा मेरा ऊपरी हाथ रहा। अनुत्तीर्ण होने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि, उन से भौतिक विज्ञान संबंधी प्रश्नों को नहीं पूछता हूँ।" तब किरण ने बताया था कि- "क्यारे! उसको वैसा बताते हो! वह तुम से कभी झगडा किया? तुम्हारे बारे में किसी को बुरी तरह नहीं सुनाया न? सभी से मिल-जुलकर, अगर शिक्षा में पीछे रह गया है, तो उनको ज्ञानी की तरह करवाना उनकी गल्ती है क्या? उस तरह रहने की वजह से वह कई लोगों के साथ दोस्त बन गए। तुम किसी से न मिलते हो, इसलिए सभी आप से दूर रहते हैं। तुम भी सभी से दोस्ती करके, उनको उत्साहजनक करके देखो। वे सभी आप से मित्रता निभाएंगे। संजय और तुम दोनों मिलकर एक दूसरे की संदेहों को हल करने से ही आपकी पढ़ाई में उन्नति होगी।" प्यारे दोस्त की सलाह से वह सोच में पड़ गया।

वास्तव में संजय एक चतुर लड़का है, जिस में सभी अच्छे गुण हैं। रवि को हमेशा संजय से जलन होती है। पहली बार उस ईर्ष्या को एक तरफ रख दिया और भौतिक विज्ञान के संदेहो की निवृत्ति कर ली। उस तरह दोनों अच्छे मित्र बन गए। लोग किस तरह होने पर भी, एक अच्छे और बुद्धिमान छात्रों की तरह बदलाना संजय की खासियत है।

इतन में संजय को चिकनगुन्या बुखार आया। पन्दह दिनों तक ठीक नहीं हुआ। मामला बहुत गंभीर बन

गया। संजय की दादी ने देवताओं से प्रार्थना की कि- संजय की तबीयत ठीक होने से प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्रों में से एक-एक पुण्य क्षेत्र के लिए पाँच हजार रुपए भेंट के रुप में देना है। इतने में संजय स्वस्थ हो गया। दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में बेहतरीन अंकों से सफलता हासिल की।

संजय की दादी ने किन-किन मंदिरों को भेंट के रूप में मनीआर्डर भेजने के बारे में बताते हुए धन दिया। कुछ दिनों के बाद उसकी दादी माँ ने फोन करके संजय से पूछी थी कि उस मंदिरों को रुपए भेजा है या नहीं भेजा। दादी माँ ने क्रोध में गालियाँ दी। ''तुम को क्यो इतनी लापरवाही? उन देवगणों की प्रार्थना करने पर ही तुम स्वस्था से हो। लेकिन तुम उन देवताओं को ही भूल गया।'' हमारे विद्यालय में दो होशियार छात्र उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने के लिए उनकी आर्थिक स्थिति ठीक

से न होने के कारण अपनी पढ़ाई को दसवीं कक्षा में ही छोडने को तैयार हो गए। उनको आपके द्वारा दिए गए रुपयों दिए थे। उन्होंने अपनी शिक्षा पूर्ति करके, अच्छी नौकरी प्राप्त करने से उनका भविष्य अच्छा होगा न। ''मानव सेवा ही माधव सेवा'' है। आप हमेशा बोलती रहती है न। उस तरह गरीब विद्यार्थियों के लिए दान करने से भगवान के आशीर्वाद हमारे ऊपर रहेंगे न। छोटी उम्र में ही अपने पोते में रहे अच्छे गुणों को देखकर संजय की दादी माँ बहुत खुश हुई। संजय की सहायता को जानकर रवि ने संजय की प्रशंसा की। वह भी अपने माता-पिता की सहायता से दो और गरीब छात्रों को वित्त सहायता की।

बच्चो! उपर्युक्त कहानी को पढ़कर आप में भी सेवा की भावना जगृत हुई होगी! सेवा न केवल मानव जीवन की शोभा है, अपितु यह भगवान की सच्ची पूजा भी है। भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी पिलाना, विद्यारहितों को विद्या देना ही सच्ची मानवता है। सेवा से मिलता मेवा। दूसरों की सेवा से हमें पुण्य मिलता है यह सही है, पर इस से तो हमें भी संतोष और असीम शांति प्राप्त होती है।

नीतिः ''मानव सेवा ही माधव सेवा'' इस पंक्ति में संपूर्ण हिन्दू धर्म का सार छिपा है। बच्चे बचपन से ही लोगों की सेवा करना सीखना है। बचपन में ही यह आदत पैदा होने से जीवन पर्यंत शांति से रह सकते हैं।

चित्रकथा

# सभी को मोक्ष

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के द्वारकानाथ

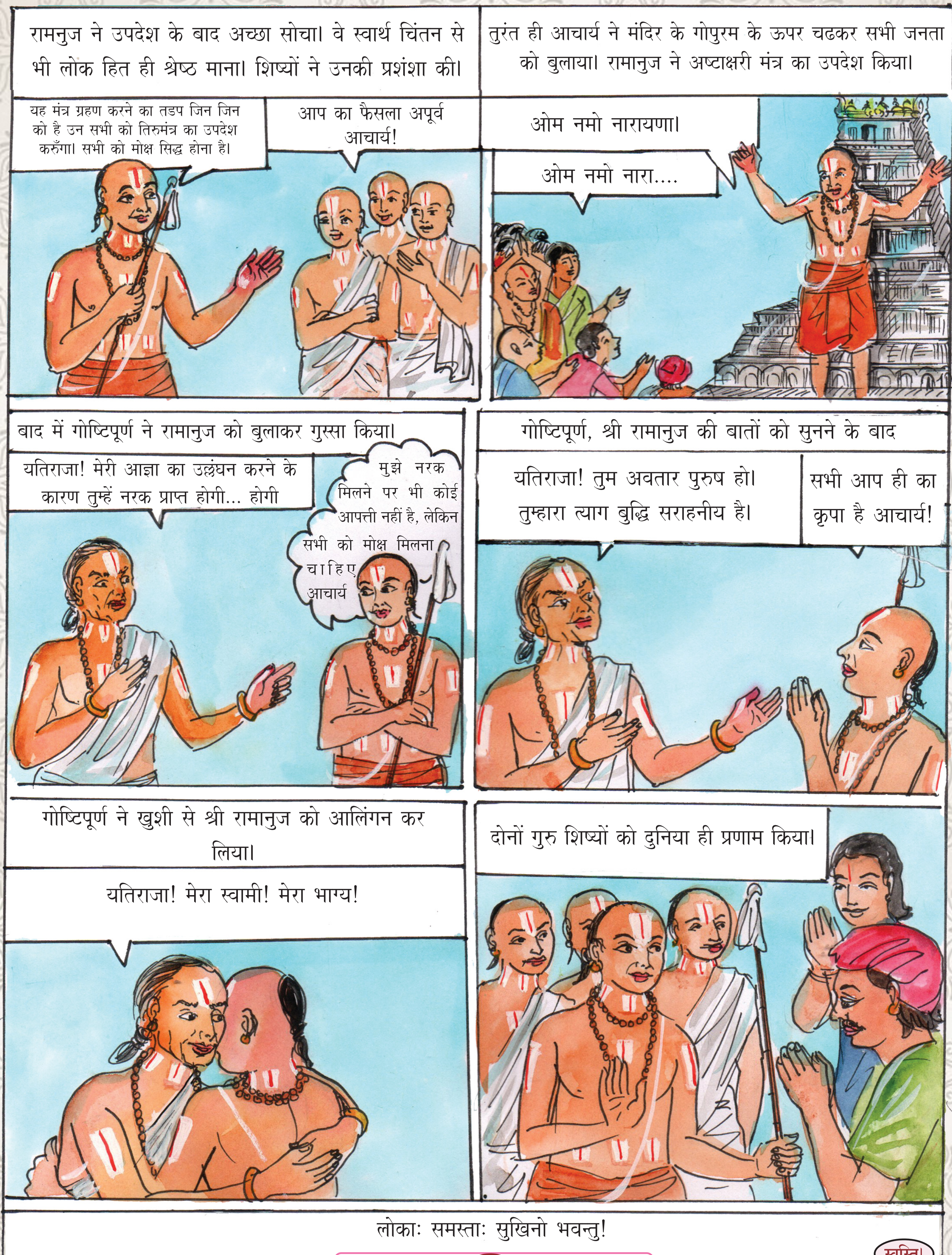
रामनुज ने उपदेश के बाद अच्छा सोचा। वे स्वार्थ चिंतन से भी लोक हित ही श्रेष्ठ माना। शिष्यों ने उनकी प्रशंशा की।
यह मंत्र ग्रहण करने का तडप जिन जिन को है उन सभी को तिरुमंत्र का उपदेश करुँगा। सभी को मोक्ष सिद्ध होना है।
आप का फैसला अपूर्व आचार्य!
तुरंत ही आचार्य ने मंदिर के गोपुरम के ऊपर चढकर सभी जनता को बुलाया। रामानुज ने अष्टाक्षरी मंत्र का उपदेश किया।
ओम नमो नारायणा।
ओम नमो नारा....
बाद में गोष्टिपूर्ण ने रामानुज को बुलाकर गुस्सा किया।
यतिराजा! मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण तुम्हें नरक प्राप्त होगी... होगी
मुझे नरक मिलने पर भी कोई आपत्ती नहीं है, लेकिन सभी को मोक्ष मिलना चाहिए आचार्य
गोष्टिपूर्ण, श्री रामानुज की बातों को सुनने के बाद
यतिराजा! तुम अवतार पुरुष हो। तुम्हारा त्याग बुद्धि सराहनीय है।
सभी आप ही का कृपा है आचार्य!
गोष्टिपूर्ण ने खुशी से श्री रामानुज को आलिंगन कर लिया।
यतिराजा! मेरा स्वामी! मेरा भाग्य!
दोनों गुरु शिष्यों को दुनिया ही प्रणाम किया।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु!
स्वस्ति।

# ‘क्विज’

आयोजक - एन.प्रत्यूषा

१) तेलुगु वालों का संवत्सरादी कौन सा है?
अ) उगादि　आ) ओणम　इ) नव वर्ष　ई) न्यू इयर

२) श्री संप्रदाय के प्रवर्तक कौन है?
अ) शंकराचार्य　आ) रामानुजाचार्य　इ) आनंदाचार्य　ई) परमानंदाचार्य

३) श्रीराम जी का जन्म और कल्याण आन्ध्र में किस प्रांत में मनाते हैं?
अ) भद्राचलम　आ) अयोध्या　इ) ओंटिमिट्टा　ई) तिरुमला

४) श्रीराम जी का प्रिय पेय पदार्थ कौन सा है?
अ) कलाव　आ) काडा　इ) शरबत　ई) खीर

५) उगादि पच्चडि में कितने रुचियों का सम्मेलन है?
अ) पाँच　आ) चार　इ) छः　ई) सात

६) रामचरित मानस के कवि कौन है?
अ) कबीरदास　आ) सूरदास　इ) बिहारी　ई) तुलसीदास

७) फलों का राजा कौन सा है?
अ) अनार　आ) आम　इ) अंजूर　ई) सेब

**जवाब**
१) अ　२) आ　३) इ　४) इ　५) इ　६) ई　७) आ

# चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

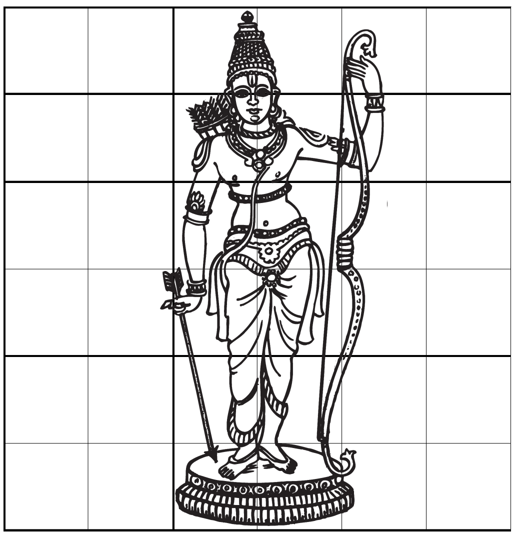

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications ), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

लोककल्याणर्थ २८-०३-२०२१ को
ति.ति.दे. के प्रशासनिक भवन के
मैदान (तिरुपति) में
ति.ति.दे. की
ओर से आयोजित
फाल्गुण लक्ष्मी वैभव-लक्ष्मी जयंति
महोत्सव का दृश्यमालिका।

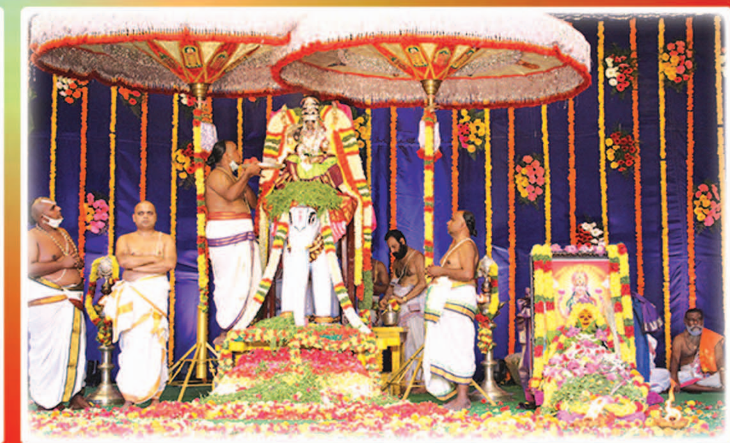

TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS